संगठन में बल

संगठन में बल

प्रकाशन विभाग
सूचना और प्रसारण मंत्रालय
भारत सरकार

प्रथम संस्करण: पौष 1882 (जनवरी 1961)
द्वितीय संस्करण: फाल्गुन 1885 (फरवरी 1964)
तृतीय संस्करण: चैत्र 1893 (मार्च 1971)
चतुर्थ परिवर्द्धित संस्करण: आषाढ़ 1900 (जुलाई 1978)
पंचम संस्करण: चैत्र 1903 (अप्रैल 1981)

प्रकाशन विभाग

मूल्य: 4.00

निदेशक, प्रकाशन विभाग, सूचना और प्रसारण मंत्रालय, भारत सरकार, पटियाला हाउस, नई दिल्ली-110001 द्वारा प्रकाशित।

विक्रय केन्द्र ● प्रकाशन विभाग

सुपर बाजार, दूसरी मंजिल कनाट सर्कस, नई दिल्ली-110001
कामर्स हाउस, करीमभाई रोड, बालार्ड पायर, बम्बई-400038
8-एस्प्लेनेड ईस्ट, कलकत्ता-700001
एल० एल० अडीटोरियम 736 अन्नासटै, मद्रास-600002
बिहार राज्य सहकारी बैंक बिल्डिंग, अशोक राजपथ, पटना-800004
निकट गवर्नमेंट प्रेस, प्रेस रोड, त्रिवेन्द्रम-695001
10बी०, स्टेशन रोड, लखनऊ-226004

प्रबंधक, भारत सरकार फोटोलिथो मुद्रणालय, फरीदाबाद द्वारा मुद्रित।

भूमिका

मनुष्य स्वभाव से ही कहानी-प्रिय है, विशेषकर बच्चों को सिखाने-पढ़ाने का कहानी सर्वसुन्दर माध्यम है। विभिन्न राज्यों और देशों की सुन्दर कथाओं का यह संग्रह इस उद्देश्य से निकाला गया है कि हमारे देश के बच्चे उन देशों की कथाओं से परिचित हों।

पशु-पक्षियों की कहानियों में बच्चों की विशेष रुचि होती है। पंचतन्त्र, हितोपदेश और ईसप आदि की कहानियों में पशु-पक्षी ही प्रधान पात्र हैं। ऐसी कहानियां सदियों से बाल-वृद्ध, सभी का समान रूप से मनोरंजन करती आई हैं। आशा है कि यह पुस्तक भी अपने इस ध्येय को पूरा करने में सफल होगी।

आजकल गांवों में पुस्तकालय खुल रहे हैं। उनके लिए रोचक कथा-साहित्य की बड़ी मांग है। उसकी पूर्ति भी इस प्रकार के कथा-साहित्य से हो सकेगी।

विषय-सूची

संगठन में बल	सावित्री देवी वर्मा	1
सियार ने दुम दबाई	वृन्दावनलाल वर्मा	5
बड़ा कौन ?	मन्मथनाथ गुप्त	9
चालाक चूहा चतुर बिल्ली	सुधा द्विवेदी	11
पिद्दी	राजाराम शास्त्री	12
अक्लमन्द चिड़िया	सन्तराम	14
म्याऊं म्याऊं	सत्यप्रकाश अग्रवाल	17
चिड़िया उड़ गई	भारतप्रकाश भाटिया	19
दो तोते	तेजकुमार 'बम'	21
घर में कौन रहेगा ?	कपिल	23
खूब रही	विजय चौहान	25
आनन्दी कौआ	गिजु भाई	27
बुराई की सजा	शम्भुदयाल चतुर्वेदी	29
खरगोश को जुकाम हुआ	रमेशचन्द्र प्रेम	31
किसान और फाख्ता	हंसराज रहबर	34
छोटा खंजन और सदाबहार पेड़	सन्तराम	37
दो दोस्त	आशारानी	39
सयाना कौआ	द्रोणवीर कोहली	41
विचित्र ऊंट	अरुण कुमार	42
नीला गीदड़	विष्णु प्रभाकर	44
राजा अजित नारायण	बृजनाथ गर्ग	46
सूत की अंटी	डा० श्यामसिंह शशि	49

संगठन में बल

एक जंगल में नदी के किनारे एक घना पेड़ था। उसी पर गौरैया के एक जोड़े ने अपना घोंसला बना रखा था। आसपास दाने-पानी की सुविधा थी। बड़े मजे में वहां गौरैया के दिन कट रहे थे। कुछ दिनों बाद उनके घोंसले में अंडों से नन्हें-नन्हें बच्चे निकल आए। अब तो उनका घोंसला बड़ा गुलजार हो गया। बारी-बारी से नर और मादा गौरैया अपने बच्चों के लिए दाना लेने जाते थे।

एक दिन की बात है कि नर गौरैया दाना चुगने गया हुआ था, मादा गौरैया अपने बच्चों को अपने नर्म-नर्म सीने के नीचे दबा कर घोंसले में सुख से बैठी थी। उसी समय वहां एक मदमस्त हाथी आ निकला। उसने अपनी लम्बी सूंड़ से पेड़ों की टहनियां तोड़नी शुरू कीं। यह देख कर गौरैया बोली—हे गजराज! तुम्हारे खाने भर को तो यहां बहुत कुछ है। नीचे-नीचे से पत्ते तोड़ लो, टहनियों को तोड़-मोड़ बेकार कर नष्ट मत करो।

पर उस मदांध हाथी ने

यह देख कर गौरैया बोली—हे गजराज! तुम्हारे खाने भर को तो यहां बहुत कुछ है। नीचे-नीचे से पत्ते तोड़ लो, टहनियों को तोड़-मरोड़ कर बेकार नष्ट मत करो।

गौरैया की बात पर ध्यान नहीं दिया। उलटा इधर-उधर के पेड़ों की टहनियों को तोड़ कर जब वह सूड़ ऊपर उठा कर उस वृक्ष की ओर बढ़ा, तो गौरैया फिर बोली—गजराज जी, आप यह क्या करने लगे हैं। इस पेड़ पर मेरा घोंसला है, इसमें मेरे प्यारे नन्हें-मुन्ने हैं। वे अभी उड़ भी नहीं सकते। आपसे प्रार्थना है कि आप इस पेड़ पर अपनी दयादृष्टि रखें। हम गरीबों ने आपका क्या बिगाड़ा है, जो अकारण ही आप हमें सताने पर तुले हुए हैं ?

पर उस अभिमानी हाथी ने उस गरीब गौरैया की प्रार्थना को अनसुनी करके वृक्ष की टहनियां नोच डालीं। अपनी सूंड़ से गौरैया का घोंसला खींच कर नीचे पटक दिया

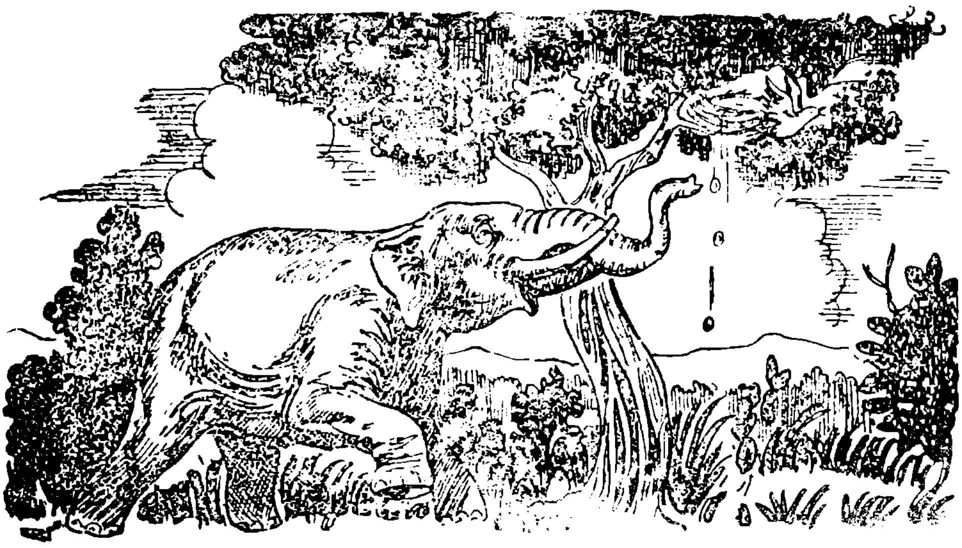

हाथी ने अपनी सूंड से गौरैया का घोंसला खींच
और उसके अंडे-बच्चों को कुचलता हुआ वह वहां से

और उसके अंडे-बच्चों को कुचलता हुआ वह वहां से आगे बढ़
की यह दुर्दशा देख कर गौरैया विलाप करने लगी। उसका विलाप सुन कर
पड़ोसी भाई एक कठफोड़वा ने वहां आकर पूछा—ऐ बहन, क्या हुआ ? कुछ बताओ भी सही।

सारा हाल सुन कर वह बोला—यह तो बहुत बुरा हुआ। इस संसार में गरीब हो या अमीर, जीने का सबको बराबर अधिकार है। गजराज ने तो यह बड़ा अन्याय किया है। आज तुम पर यह मुसीबत आई है, कल हम पर भी आ सकती है। इस अत्याचार का तो डट कर मुकाबला करना होगा।

अपने आंसू पोंछ कर गौरैया बोली—भैया ! हम शक्तिशाली गजराज से भला कैसे बदला ले सकते हैं ?

कठफोड़वा बोला—बहन ! संगठन में ही बल है। देखो, अनेक तिनकों से बने रस्से से बंध कर बलशाली हाथी भी लाचार हो जाता है। चलो, आओ, हम कुछ तरकीब सोचते हैं। मेरी एक सहेली है—मधुमक्खी। वह बड़ी बुद्धिमती है। चलो, उसकी सलाह लेते हैं।

यह विचार कर वे दोनों मधुमक्खी के पास आए। सारा हाल सुनने के बाद मधुमक्खी बोली—ठीक है, भाई, मुझसे जो कुछ हो सकेगा मैं करने को तैयार हूं। तीन से चार भले, चलो, मैं तुम दोनों को अपने एक बुद्धिमान पड़ोसी मेघदूत नाम के मेंढक के पास ले चलती हूं। वहां चल कर हम सलाह-मशविरा करेंगे कि इस दुष्ट हाथी से किस प्रकार बदला लिया जाए।

बस, वहां से वे तीनों मेघदूत मेंढक के पास आए। सारी कहानी सुनने के पश्चात एक सयाने के सदृश वह मेंढक बोला—भाई, बेचारी गौरैया के संग तो यह बहुत ज्यादती हुई। बेवकूफ गजराज ने सोचा होगा कि यह नन्हीं-सी चिड़िया मेरा क्या बिगाड़ सकती है। वह शायद यह भूल गया है कि संगठन के आगे अत्याचारियों को झुकना ही पड़ता है। आज हम इस अत्याचार का बदला लेकर ही रहेंगे। देखो, मैं जैसा कहूं वैसा करो। गौरैया बहन, जरा तुम झट से उड़ कर पता तो लगा लाओ कि इस समय हाथी है कहां ?

बस, गौरैया मिनटों में लौट कर आई और बोली—दादा! हाथी खा-पीकर इस नदी के किनारे से बीस कदम की दूरी पर सुस्ता रहा है।

यह सुन कर मेघदूत मेंढक मधुमक्खी से बोला—मक्खी रानी ! तुम ऐसा करो कि हाथी के कान के पास जाकर मधुर-मधुर स्वर में गुन-गुन करने लगो। तुम्हारे गाने को सुन कर हाथी जरूर ऊंघने लगेगा। बस, उस समय कठफोड़वा मौके की ताक में रहे और जैसे ही हाथी की आंख लग जाए वह झपट कर अपनी पैनी चोंच से उसकी दोनों आंखें फोड़ दे। उस समय पीड़ा और जलन से परेशान होकर हाथी इधर-उधर जल की खोज में भागेगा। नदी के इस किनारे के पास ही दलदल से भरा एक गहरा गढ़ा है। मैं उसी के किनारे बैठ कर टर्र-टर्र की आवाज लगाऊंगा। मेरी आवाज का पीछा करता हुआ हाथी पानी पीने के लिए अवश्य उधर को ही जाएगा और नदी में उतरते ही उस गढ़े में डूब जाएगा।

यह युक्ति सब को पसन्द आ गई।

पेट भरा होने के कारण हाथी को वैसे ही सुस्ती आ रही थी। ऊपर से मधुमक्खी का गुन-गुन गीत सुन कर उसकी आंख लग गई। इसी समय कठफोड़वा ने लपक कर अपनी पैनी चोंच से उसकी दोनों आंखें फोड़ दीं।

इसी समय कठफोड़वा ने लपक कर अपनी पैनी चोंच से उसकी दोनों आंखें फोड़ दीं।

हाथी हड़बड़ा कर उठ बैठा और अपनी जलन मिटाने के लिए मेंढक की आवाज का पीछा करता हुआ नदी की ओर भागा। उसे इधर आता देख मेघदूत कूद कर उसी गढ़े के किनारे पर बैठ कर जोर-जोर से टर्र-टर्र करने लगा। हाथी को दिखता तो था नहीं, वह धड़ाम से गढ़े में गिर पड़ा और दलदल में धंसता चला गया तथा छटपटा कर मर गया।

इस प्रकार संगठन के बल पर नन्हीं गौरैया ने अपना बदला बलवान गजराज से लेकर ही छोड़ा।

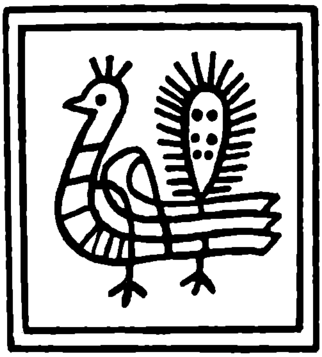

स्यार ने दुम दबाई

एक गांव था। उसके खेत दूर-दूर तक फैले हुए थे। इन खेतों के बीच-बीच में छोटी-मोटी झाड़ियां थीं। उस गांव में हरजी नाम का एक किसान था। उसके खेत गांव से कुछ दूर पड़ते थे। जब खेतों में ज्यादा काम का समय आता, तब हरजी घर पर कम आता था। अपने किसी खेत पर बसेरा डाल लेता था। उसके लिए रोटी उसकी पत्नी घर से ले जाया करती थी। पत्नी का नाम रानी बहू था। वह काम करने से कभी नहीं थकती थी, पर थी बेचारी भोली-भाली।

हरजी के खेतों के लिए दो मार्ग पड़ते थे। एक कम दूरी का था, पर यह जाता था जंगल-झाड़ी में होकर। दूसरे मार्ग पर जंगल नहीं पड़ता था, परन्तु वह था दूरी का। रानी बहू दूरी के ही मार्ग से रोटी ले जाया करती थी। एक दिन उसे देर हो गई, तो जंगल वाले मार्ग से चल पड़ी। एक जगह उसे कांटों पर कांटे मिले, इतने कि वे उसके लहंगे में उलझ गए। उसने रोटियों की पोटली एक तरफ रख दी और कांटों की उलझन को दूर करने में जुट गई। कांटों से पीछा छुड़ाने पर उसने पोटली की तरफ आंख दौड़ाई तो देखा कि पोटली गायब। किन्तु थोड़ी-सी दूरी पर एक सियार पोटली खोल कर रोटियां चट किए जा रहा था। रानी बहू ने सियार से विनती की—दाउर, यह क्या कर रहे हो? हमारी रोटी क्यों छीन ली?

सियार ने दम्भ के स्वर में उत्तर दिया—जानती नहीं, मैं इस जंगल का राजा हूं। यहां से जो कोई निकलता है, उसे हमारा कर चुकाना पड़ता है। तुम रोज इससे दुगनी रोटियां लाया करो। आधी मेरे लिए और आधी अपने पति के लिए। तुम्हारी पोटली का कपड़ा छोड़ देता हूं, इसे बहुत समझो। जाओ ले जाओ।

रानी बहू ने कपड़ा लिया और घर लौट आई। उसने फिर से जल्दी-जल्दी रोटी बनाई और दूरी वाले मार्ग से अपने पति के पास ले गई। पति ने देरी का कारण पूछा तो उसने बहाना बना दिया। उसने सोचा कि जंगल के राजा से कौन वैर मोल ले।

एक दिन रानी बहू फिर जंगल वाले मार्ग से रोटी लेकर निकली। उसे फिर

उसी तरह कांटे गड़े और उसके कपड़ों में अटके। उसने खाने की पोटली एक तरफ रख दी। जब कांटों से निबटी और पोटली की ओर देखा तब उसे वहां न पाया। सियार पोटली खोल कर रोटियां खाए जा रहा था। सियार बोला—तुमसे कह दिया था कि दुगनी रोटियां लाया करो, तो तुमने यहां से निकलना ही छोड़ दिया। अब ऐसी गलती मत करना। ले जाओ अपना कपड़ा।

रानो यह कपड़ा लेकर घर लौट आई। उसने फिर से खाना पकाया और पति के पास दूरीवाले रास्ते से देर में पहुंची। अबकी बार वह पति के सामने बहाना न बना सकी। उसे सारी बात साफ-साफ बतला देनी पड़ी।

उसके पति हरजी ने कहा—अच्छा, मैं देखूंगा उसे। कल मैं आऊंगा जंगली रास्ते से।

रानो बहू को डर लगा। वह बोली—वह जंगल का राजा है, किसी संकट में न डाल दे।

हरजी ने उसे भरोसा दिया— घबराओ नहीं, सब ठीक हो जाएगा।

दूसरे दिन हरजी अपनी पत्नी का लहंगा-दुपट्टा पहन-ओढ़ कर उसी जंगल वाले रास्ते से आया। वह बारीक निगाहों से इधर-उधर देखता आ रहा था। थोड़ी दूर चल कर उसने देखा कि एक सियार झाड़ी के कांटे जल्दी-जल्दी तोड़ कर उन्हें उसी पगडंडी पर फैला रहा है जिसकी एक तरफ से हरजी आ रहा था। सियार ने कांटे फैला दिए थे और एक झाड़ी में जा छिपा था।

हरजी ने निकट पहुंच कर अपना स्वर स्त्रियों जैसा बनाकर कहा—सियार दाऊ, सियार दाऊ, मैं तो तुम्हें न्योता देने आई थी। कल हमारे यहां बड़ी पंगत है, जरूर पधारो।

सियार झाड़ी से बाहर निकल आया। उसने पूछा—आज तुम खाना नहीं लाई ?

—आज तो मैं आपको न्योता देने आई हूं। —हरजी उसी स्वर में बोला।

बड़े विनम्र स्वर में फिर बोला —आज, सियार दाऊ, आप उपवास कर लें। कल इतना खाएं, इतना खाएं कि दो-चार दिन खाने की जरूरत न पड़े।

सियार ने हरजी के घर का पता-ठिकाना पूछा। हरजी बतला कर चला आया।

दूसरे दिन सियार—होशियार, खबरदार, मैं इस जंगल का राजा आ रहा हूं—कहता हुआ हरजी के घर के पास जा पहुंचा। वहां बकरा, बकरी और भेड़ों के मेमने खूंटियों से बंधे हुए थे। एक बड़ा खूंटा खाली था। हरजी सियार की आवभगत के लिए आ गया।

हरजी बोला— देखती क्या हो, झाड़ो डंडा इसकी पीठ पर ओर लगाओ इसकी अकल ठिकाने

हरजी बोला—सियार दाऊ, राम-राम, मैंने कल अपनी घरवाली से आपको निमन्त्रण भेजा था। बड़ी कृपा की, आप आ गए। आपके लिए ये बकरी-बकरे यहां बांध रखे हैं। भीतर रोटी तैयार हो गई है। आपको इस बड़े खूंटे से बांध दूं, फिर कायदे के साथ आपको भोजन कराया जाएगा।

सियार लालच के मारे बेकाबू हो रहा था। उसने स्वीकार कर लिया। हरजी ने बड़े खूंटे से सियार को बांध दिया। फिर वह भीतर चला गया।

थोड़ी देर बाद हरजी रानी बहू के साथ बाहर आ गया। रानी बहू के हाथ में डंडा था। उसके चेहरे पर डर का कोई चिह्न नहीं था।

हरजी ने अपनी पत्नी से कहा—यही है वह सियार जिसने तुम्हारी रोटियां छीन खाई थीं ?

—यही है जो अपने को जंगल का राजा कहता था! —उसकी पत्नी ने उत्तर दिया।

हरजी बोला—देखती क्या हो, झाड़ो डंडा इसकी पीठ पर और लगाओ इसकी अक्ल ठिकाने।

रानी बहू ने सियार की पीठ पर डंडे बरसाए। साथ-साथ वह कहती जाती थी—

धोखा देके रोटी चाटी,
अब खाता रह मेरी लाठी।

कहते हैं कि तब से ही सियार अपनी दुम दबाए रहता है।

बड़ा कौन ?

छोटी-सी झींगा मछली ने न जाने कैसे एक दिन अपना चेहरा देख लिया । उसे बड़ा आश्चर्य हुआ । उसने कहा— लोग मुझे मछली कहते हैं, पर मैं मछली कहां हूं ? न मछलियों से मेरी शक्ल मिलती है, न और कोई बात । और अगर मैं मछली हूं, तो इन मछलियों से अलग किस्म की हूं ।

झींगा ने इधर-उधर जाकर देखा तो उसे एक मेंढक दिखाई पड़ा । उसने मेंढक से कहा—भाई, तुमने तो जल और थल दोनों देखे हैं, गाना भी तुम बढ़िया गा लेते हो, अब बतलाओ कि क्या मैं मछली हूं ?

मेंढक ने झींगा को ध्यान से देखा और सोचा इसका दिमाग तो सही है न ? वह नाराज होकर टरटराता हुआ बोला—तुम मछली नहीं तो क्या शेर हो ?

झींगा दुखी हुई बोली— टर्र-टर्र दादा, तुम नाराज क्यों होते हो ? तुम ज्ञानी हो, इसलिए मैंने तुम से यह बात पूछी ।

मेंढक बोला—जा-जा, मुझे तेरी तारीफ नहीं चाहिए, बड़े-बड़े कवि मेरी तारीफ करते हैं । तू जा ।

झींगा दुखी होकर चल पड़ी । उसने फिर से अपना चेहरा देखा, मन-ही-मन बोली—मैं मछली हरगिज नहीं हूं ।

मेंढक ने तो कह दिया, अब वह किससे पूछे ? सामने पेड़ पर कौआ बैठा था । झींगा ने कौए से पूछा—यों तो तुम सब कुछ खा जाते हो, इस नाते तुम मेरे दुश्मन भी हो, पर एक बात तो बताओ कि क्या मैं मछली हूं ?

कौआ सवेरे से भूखा था, बोला— मैं कैसे कहूं कि तुम क्या हो । तुम पानी से ऊपर आओ तो देख कर बताऊं ।

झींगा समझ गई कि कौए के मन में मैल है । मेंढक था तो टर्रा, पर उसके मन में मैल नहीं था, पर यह कौआ तो खा ही जाना चाहता है । जिसका मन ही खोटा हो वह सच्ची बात क्या बताएगा ?

झींगा डुबकी लगा गई। उसने इसके बाद यह बात कई लोगों से पूछी। सबने वही बात कही कि तू मछली नहीं तो और क्या है ? बेशक तू मछली ही है।

कई दिनों तक झींगा दुखी रही, पर एक दिन उसके मन में फिर उमंग आई। मन ही मन बोली—मछली हूं तो क्या, मछली कोई मामूली चीज है ? न हाथ, न पैर, फिर भी किस तरह सब काम करती हूं।

उसने मछलियों से कहा—-भई ! हमारी कौम तो बहुत ऊंची कौम है। कौआ, मेंढक, केंचुआ इन सब से ऊंची हमारी कौम है।

मछलियों ने उसकी बात की कोई परवाह नहीं की और बिना जवाब दिए अपने-अपने काम से चली गईं।

पर झींगा ने मछली कौम की सारी बातों का पता लगाना शुरू किया। उसे यह पता लगा कि ह्वेल नाम की एक मछली होती है, जो टापुओं के बराबर होती है।

तब उसने सोचा, ह्वेल से मिलना चाहिए। बड़ी मछलियों से पूछा कि उसका पता क्या है तो वे बोलीं–वह तो समुद्र में रहती है। तू वहां कैसे जा सकती है ?

पर झींगा पर धुन सवार थी। वह जैसे-तैसे नदी से समुद्र में पहुंची और तरह-तरह के खतरे पार करती हुई ह्वेल के पास पहुंच गई। पर उसे बड़ी देर तक पता नहीं लगा कि ह्वेल का मुंह किधर है। जब मुंह का पता लगा, तो कान का पता नहीं लगा। उसने मुश्किल से उसके कान का पता लगा कर कहा–ह्वेल लकड़दादी, ह्वेल लकड़दादी !

ह्वेल ने तो पहले सुना ही नहीं। फिर मुश्किल से जब सुना तो बोली क्या बात है ?

झींगा ने कहा—मैं झींगा हूं। कोई मेरी परवाह नहीं करता, सब मुझे दो कौड़ी का समझते हैं। कहते हैं चल-चल, तू किस खेत की मूली है !

ह्वेल ने कहा—तो मैं क्या करूं ?

झींगा बोली—आप मुझे पक्के कागज पर अपनी कलम से यह लिख दीजिए कि मैं आपके खानदान की हूं।

ह्वेल हंस कर बोली—पगली कहीं की, मैं लिख कर दे भी दूं तो भी कौन पूछेगा ? हर एक अपनी बड़ाई से बड़ा होता है, बाप-दादों की बड़ाई से कोई बड़ा नहीं होता। इसलिए तू भाग जा।

झींगा क्या करती। वहां से चुपचाप अपनी नदी में वापस आ गई।

●

चालाक चूहा चतुर बिल्ली

बालको, तुमने बिल्ली को खाना खाने के बाद मुंह धोते हुए जरूर देखा होगा। क्या तुम बता सकते हो कि बिल्ली कुछ खाने के बाद, अपना मुंह पंजे से क्यों धोती है ? अच्छा, सुनो !

बिल्ली बहुत चतुर होती है, इसलिए वह शेर की मौसी कहलाती है। वह चूहों का शिकार करती है। चूहा भी कम चालाक नहीं होता। वह बिल्ली को खूब छकाता है। एक समय की बात है, एक बिल्ली बहुत भूखी थी। वह यहां-वहां घूमती फिरी, किन्तु उसे खाने के लिए कुछ नहीं मिला। बड़ी दौड़-धूप के बाद अन्त में उसने एक चूहे को पकड़ लिया। वह चूहे को मार कर खाने ही वाली थी कि चूहा बोला—मैंने तुम्हारा कोई नुकसान नहीं किया है, फिर तुम मुझे मार कर क्यों खाना चाहती हो ? कृपया मुझे छोड़ दो।

बिल्ली बोली—मैं तुम्हें छोड़ दूं, यह असम्भव है। मैं बहुत भूखी हूं, इसलिए मैं तुम्हें खाकर अपना पेट भरूंगी।

चूहा बिल्ली के चंगुल में था। उसे सूझ नहीं रहा था कि कैसे छुटकारा पाया जाए। अन्त में चालाक चूहे ने बिल्ली के फन्दे से छूटने की एक तरकीब सोच ली। चूहा बोला—बिल्ली रानी, आप मुझे खाने से पहले अपना मुंह धोना कैसे भूल गईं ?

बिल्ली ने कहा—भला मैं कैसे भूल सकती हूं ? लो, अभी मैं मुंह धोती हूं। यह कह कर बिल्ली पंजे से अपना मुंह साफ करने लगी।

ज्योंही बिल्ली के पंजे से चूहा छूटा, त्योंही वह वहां से नौ-दो-ग्यारह हो गया। बिल्ली उसे देखती ही रह गई। बिल्ली बोली—कितना चालाक चूहा है ! इसने मुझे ऐसा छकाया कि जीवन भर के लिए मैं पाठ सीख गई। आगे से अब मैं कुछ खाने के बाद ही अपना मुंह धोया करूंगी।

तभी से बिल्ली ने खाना खाने से पहले अपना मुंह धोना बन्द कर दिया और अब वह कुछ खाने के बाद ही अपना मुंह धोती है।

●

पिद्दी

एक थी पिद्दी। वह घर से कमाने-खाने चली। चलते-चलते रास्ते में उसे बड़ा-सा वृक्ष मिला। वह बोला—

—पिद्दी, पिद्दी, कहां चली ?

—कमाने-खाने।—पिद्दी ने उत्तर दिया।

—कोई रखे तो रह भी जाए ?

—क्या ओढ़ाए, क्या बिछाए, क्या पहनाए और क्या खिलाए ?

—पत्ते ओढ़, पत्ते बिछा, पत्ते पहन और बरबट्टे खा।

—नहीं, मैं नहीं रहती।

और पिद्दी आगे चल दी। चलते-चलते उसे दोपहर हो गई। तब उसे पीपल मिला। पीपल पूछने लगा—

—पिद्दी, पिद्दी, कहां चली ?

—कमाने-खाने।

—कोई रखे तो रह भी जाए ?

—क्या ओढ़ाए, क्या बिछाए, क्या पहनाए और क्या खिलाए ?

—पत्ते ओढ़, पत्ते बिछा, पत्ते पहन और पीपलबट्टी खा।

—नहीं, तब नहीं ठहरती।

और वह आगे चल दी। चलते-चलते तीसरे पहर उसे एक तोता मिला। तोता पूछने लगा—

—पिद्दी, पिद्दी, कहां चली ?

—कमाने-खाने।

—कोई रखे तो रह भी जाए ?

—क्या ओढ़ाए, क्या बिछाए, क्या पहनाए और क्या खिलाए ?

—पंख ओढ़, पंख बिछा, पंख पहन और फल खा।

—नहीं, तब नहीं रहूंगी।

पिद्दी और आगे चल दी। चलते-चलते सांझ हो गई। तब उसे एक चूहा मिला। चूहा बोला—

—पिद्दी, पिद्दी, कहां चली ?

—कमाने-खाने।

—कोई रखे तो रह भी जाए ?

—क्या ओढ़ाए, क्या बिछाए, क्या पहनाए और क्या खिलाए ?

—मखमल ओढ़, मखमल बिछा, मखमल पहन और लड्डू-पेड़े खा।

—हां, तब तो ठहर जाऊंगी।

पिद्दी चूहे के पास ठहर गई। चूहा रात को जगह-जगह से मखमल के टुकड़े काट-काट कर लाता और हलवाई की दुकान से लड्डू-पेड़े उठा लाता। पिद्दी दिन भर चूहे के घर का काम करती। झाड़ू देती। पानी भरती। खाना पकाती और घर की देख-भाल करती।

एक दिन चूहे ने कहा—पिद्दी ! नहाए बहुत दिन हुए। आज नहाना चाहता हूं, इसलिए पानी गरम कर दे।

पिद्दी ने पानी चूल्हे के ऊपर रख दिया। जब पानी उबलने लगा तब पिद्दी बोली—चूहे जी स्नान कर लो।

चूहा नहाने गया और उबलते पानी में लुढ़क गया। पिद्दी ने बहुत देर तक बाट देखी पर चूहा लौट कर नहीं आया। तब पिद्दी बोली—

बड़ छोड़ा, पीपल छोड़ा, हरे पंख का तोता छोड़ा।

चूहे जी, कभी घर भी आओगे ?

पिद्दी हार कर जब चूहे के पास पहुंची तो उसे मरा हुआ पाया। बेचारी अपना मन मार कर घर को लौट आई।

अक्लमंद चिड़िया

एक समय की बात है, किसी चिड़ीमार ने एक चिड़िया अपने जाल में फंसा ली। वह उसे फंदे में फंसी देख बहुत प्रसन्न हुआ।

चिड़िया ने गिड़गिड़ा कर चिड़ीमार से प्रार्थना की— कृपा करके मुझे छोड़ दो। मैं इतनी छोटी हूं कि यदि तुम मुझे भून कर खाओगे तो मेरे मांस से तुम्हारा एक कौर भी न बन सकेगा। यह तो 'ऊंट के मुंह में जीरा' जैसी बात होगी।

निर्दयी चिड़ीमार चुपचाप सुनता रहा। चिड़िया फिर गिड़गिड़ाई—मुझे पिंजड़े में बन्द रखने से भी तुम्हें कोई लाभ न होगा। कारण यह कि मैं गा नहीं सकती। पर यदि तुम दया करके मुझे छोड़ दोगे तो मैं तुम्हें तीन ऐसी अच्छी और कीमती बातें बताऊंगी कि जिन पर अमल करके तुम जीवन में सुखी और सफल रह सकोगे।

पहले तो चिड़ीमार चिड़िया की बात सुन कर ठिठका, परन्तु फिर बोला—बहुत अच्छा, मैं तुम्हें छोड़ देता हूं। पर वे तीन अच्छी बातें मुझे बता दो।

जाल से छूट कर चिड़िया बड़ी खुश हुई। उसने चैन की सांस ली। फिर बोली–पहली बात यह है कि कभी किसी ऐसी बात पर विश्वास मत करो जिसे तुम्हारी अक्ल ठीक न समझे। दूसरी बात यह है कि अपने किसी ऐसे काम पर पछतावा न करो जिसे तुम बदल न सकते हो। और तीसरी बात यह है कि कभी कोई असम्भव काम करने की कोशिश न करो।

चिड़ीमार को बहुत गुस्सा आया कि मैंने व्यर्थ ही चिड़िया को छोड़ कर उसकी बेमतलब की तीन बातें सुनीं। चिड़िया से उसने कहा भी—इन बातों को तो मैं पहले से ही जानता हूं, तूने मुझे कोई विशेष बात नहीं बताई। और ठीक भी है, एक निकम्मी चिड़िया मुझे बता भी क्या सकती है।

—मैं निकम्मी हूं ?—यह कह कर चिड़िया फिर से बोली—अरे मूर्ख, तू गलत समझ रहा है, मैं निकम्मी नहीं। मेरे पेट के अन्दर एक बहुत बड़ा कीमती रत्न है। यदि तूने पकड़ कर मुझे काटा होता और वह रत्न पा लिया होता तो निश्चय ही तू धनी बन जाता।

यह सुन कर चिड़ीमार को अपने पर बहुत क्रोध आया कि मैंने जाल में फंसी चिड़िया को क्यों छोड़ दिया। क्रोध में आग-बबूला हो उसने चिड़िया से कहा—तू समझ क्या रही है अपने आपको ? मैं तुझे फिर से पकड़ लूंगा।

इतना कह कर वह पेड़ पर चढ़ने लगा, परन्तु फिसल कर नीचे गिर पड़ा और बुरी तरह घायल हो गया।

उसे घायल देख चिड़िया ने

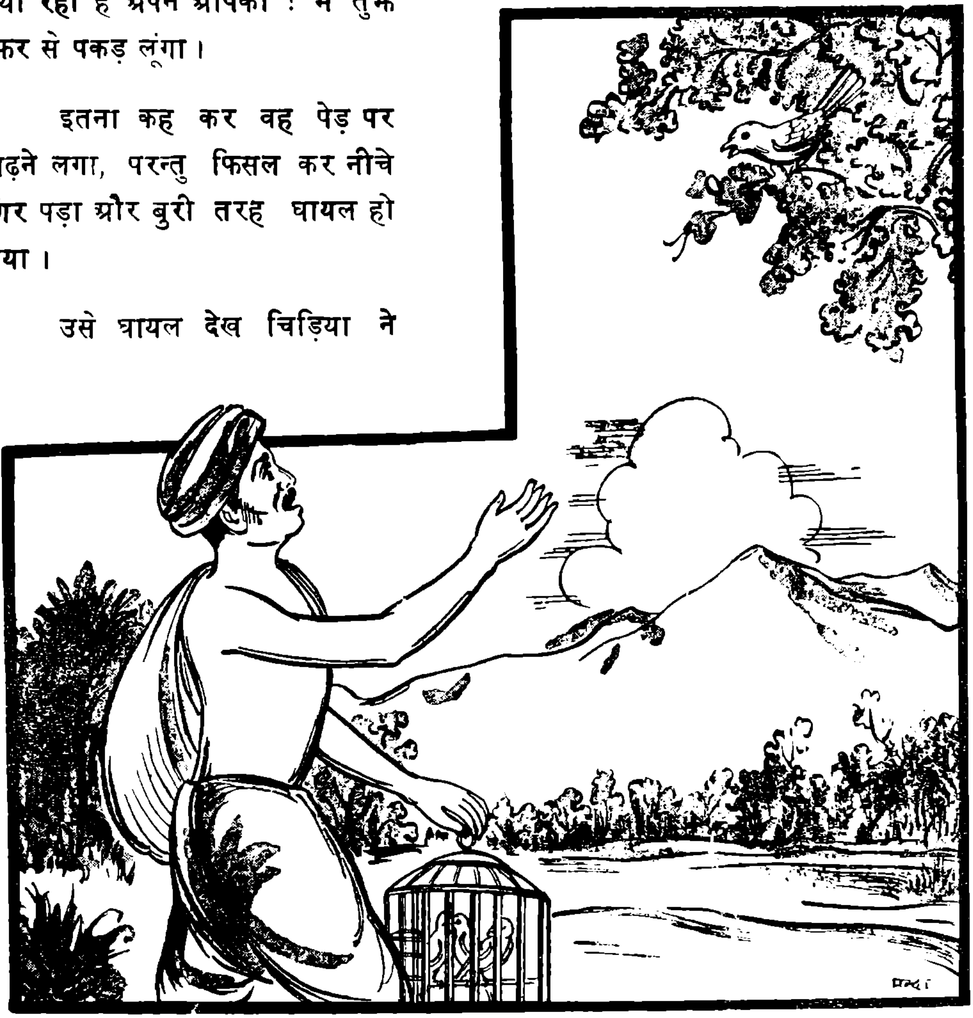

—अरे मूर्ख, तू गलत समझ रहा है, मैं निकम्मी नहीं।
मेरे पेट के अन्दर एक बहुत बड़ा कीमती रत्न है।

ऊपर से एक ठण्डी सांस छोड़ी और बोली—अरे मूर्ख ! खेद है, तुझे मेरी तीनों बातें थोथी लगी थीं। तूने डींग मारी थी कि तू तीनों बातें जानता है। अब तू आप ही मुझे बता कि क्या तू कोई ऐसी चिड़िया जानता है जिसके पेट में कोई रत्न हो सकता है ? इस पर भी तूने, अपनी समझ के विपरीत, मेरी बात पर विश्वास कर लिया। दूसरी भूल तुझसे यह हुई कि तू मुझे छोड़ कर पछताया और बाद में मुझे पकड़ने का असफल

प्रयत्न भी किया। तीसरी मूर्खता तूने यह की कि पेड़ पर चढ़ कर तूने मुझे पकड़ना चाहा। यह बात तेरे लिए नामुमकिन थी। क्या तुझे मालूम नहीं कि मैं उड़ना जानती हूं और इस पेड़ पर से उड़ कर कहीं भी जा सकती हूं ? तनिक सोच कि तू कहां तक मेरा पीछा करेगा ?

चिड़िया ने उस घायल चिड़ीमार से यह भी कहा—अच्छा, अब उठ, अपना काम कर। मैंने जो बातें बताई हैं, उन्हें सदा याद रख।

चिड़ीमार अब अपनी भूल पर लज्जित था, परन्तु अब उसे थोड़ी समझ भी आ गई थी।

म्याऊं म्याऊं

एक थी बिल्ली। बेचारी के पास रहने के लिए घर नहीं था। बिल्ली के बच्चे होने वाले थे, इसलिए वह बच्चों के लिए एक घर बनाना चाहती थी। घर बनाने के लिए सामान चाहिए, पर सामान कहां से ग्राए? उसे एक तरकीब सूझी ग्रौर वह सड़क के किनारे जाकर बैठ गई। उधर से एक बैलगाड़ी गुजरी। बैलगाड़ी पर ईंटें लदी थीं। बिल्ली ने बैलगाड़ीवाले से कहा—ग्रच्छे बैलगाड़ीवाले, मुझे कुछ ईंटें दे दो।

बैलगाड़ीवाले ने बिल्ली को कुछ ईंटें दे दीं। थोड़ी देर के बाद एक ग्रौर बैलगाड़ी उधर से गुजरी। उस बैलगाड़ी में खपरैल थे। बिल्ली ने बैलगाड़ीवाले से कहा—भाई, मुझे घर बनाना है, थोड़े से खपरैल दे दो।

बैलगाड़ीवाले ने बिल्ली को थोड़े से खपरैल दे दिए। थोड़ी देर के बाद एक ग्रौर बैलगाड़ी सड़क से गुजरी। उस बैलगाड़ी पर लकड़ियां लदी थीं। बिल्ली ने बैलगाड़ी वाले से कहा—भैया, मुझे घर बनाना है, थोड़ी-सी लकड़ियां दे दो।

बैलगाड़ीवाले ने थोड़ी-सी लकड़ियां दे दीं। इस तरह सामान जमा करके बिल्ली ने एक छोटा सा घर बना लिया।

उस नए घर में बिल्ली ने तीन बच्चे दिए।

पहले बच्चे का नाम बिल्ली ने ईंटोंवाला म्याऊं रखा. दूसरे बच्चे का नाम खपरैलोंवाला म्याऊं रखा ग्रौर तीसरे बच्चे का नाम लकड़ियोंवाला म्याऊं ।

बिल्ली-मां हर रोज ग्रपने बच्चों के लिए खाना लाने घर से बाहर जाती। जब वह वापस ग्राती तो किवाड़ के पास खड़ी होकर पुकारती—ईंटोंवाले म्याऊं, दरवाजा खोलो, दरवाजा खोलो। खपरैलवाले म्याऊं, दरवाजा खोलो, दरवाजा खोलो। लकड़ियोंवाले म्याऊं, दरवाजा खोलो, दरवाजा खोलो।

बिल्ली-मां की यह ग्रावाज सुन कर बच्चे दरवाजा खोल देते। एक दिन ऐसा हुग्रा कि एक चालाक लोमड़ी ने बिल्ली-मां को दरवाजे पर इस तरह पुकारते सुन लिया। दूसरे दिन जब बिल्ली-मां बाहर गई हुई थी, लोमड़ी ने घर में घुसना चाहा। लेकिन तीनों बच्चों ने लोमड़ी की भद्दी ग्रावाज को पहचान लिया ग्रौर उन्होंने दरवाजा नहीं

खोला। अगले दिन लोमड़ी एक झाड़ी के पीछे छिप गई और उसने एक बार फिर बिल्ली-मां को दरवाजे पर पुकारते हुए सुना।

लेकिन इस बार भी लोमड़ी बिल्ली-मां जैसी बारीक और सुन्दर आवाज की नकल न कर सकी, इसलिए बच्चों ने दरवाजा नहीं खोला।

तीसरे दिन लोमड़ी ने बिल्ली की आवाज की नकल ठीक तरह से उतार ली। बिल्ली के बच्चों ने दरवाजा खोल दिया। फिर क्या था, लोमड़ी दांत पीस कर छोटे-छोटे बच्चों पर उछल पड़ी। बच्चों ने जोर-जोर से चिल्लाना शुरू कर दिया। यह अच्छा हुआ कि उसी समय उधर से एक शिकारी जा रहा था। शिकारी ने बिल्ली के बच्चों को रोते हुए सुना और भाग कर बिल्ली के मकान के अन्दर आ गया।

उसने देखा कि लोमड़ी बिल्ली के छोटे-छोटे बच्चों को खाना चाहती है। शिकारी को बड़ा गुस्सा आया। उसने लोमड़ी को इतना पीटा, इतना पीटा कि लोमड़ी वहां से दुम दबा कर भाग खड़ी हुई और फिर उसने कभी अपनी सूरत नहीं दिखाई। तब तक बिल्ली-मां भी घर लौट आई। उसे जब सारी बातों का पता चला तो बिल्ली-मां ने अपने बच्चों को गले लगा लिया और शिकारी को बहुत-बहुत धन्यवाद दिया।

चिड़िया उड़ गई

एक थी भैंस और एक थी चिड़िया। दोनों में बड़ी दोस्ती थी। वे आपस में हमेशा मीठी-मीठी बातें किया करती थीं। एक-दूसरे के दुख-सुख में साथ देती थीं।

एक दिन चिड़िया और भैंस में झगड़ा हो गया। चिड़िया बोली—तेरे गोबर से मेरी बीट बड़ी होती है।

भैंस बोली—यह तो हर कोई देख कर कह सकता है कि तेरी बीट से मेरा गोबर हमेशा ज्यादा होता है।

चिड़िया न मानी। उसने कहा—अच्छा, आओ देखें तो।

भैंस मान गई। यह तय हुआ कि पहले चिड़िया भैंस पर बीट करे और तब भैंस चिड़िया पर। जो भी डूब जाए वह हारा।

पहले चिड़िया ने भैंस पर बीट की। परन्तु उससे क्या होना था? भैंस ने अपना शरीर हिलाया। बीट जमीन पर जा गिरी।

अब भैंस की बारी थी। उसने चिड़िया के ऊपर गोबर किया। बेचारी चिड़िया छोटी-सी तो थी ही। वह उसमें दब गई। बाहर न निकल सकी।

वह बड़ी दुखी हुई। सोचने लगी, यह क्या मुसीबत मोल ले ली। परन्तु उसने इस मुसीबत के समय भी हिम्मत न हारी। उसने इससे बच निकलने का एक उपाय किया।

उसे उधर से गुजरता हुआ एक आदमी दिखाई पड़ा। वह बोली—भैया, भैया, मुझे यहां से निकालते जाना।

वह आदमी अपनी धुन में मस्त चला जा रहा था। वह हैरान था कि यह आवाज कहां से आई? उसने इधर-उधर देखा। उसकी निगाह गोबर पर गई। उसमें से उसे कुछ हिलता-सा दिखाई पड़ा।

उसी समय चिड़िया फिर बोली—मुसाफिर भैया, मुझे निकालते जाना।

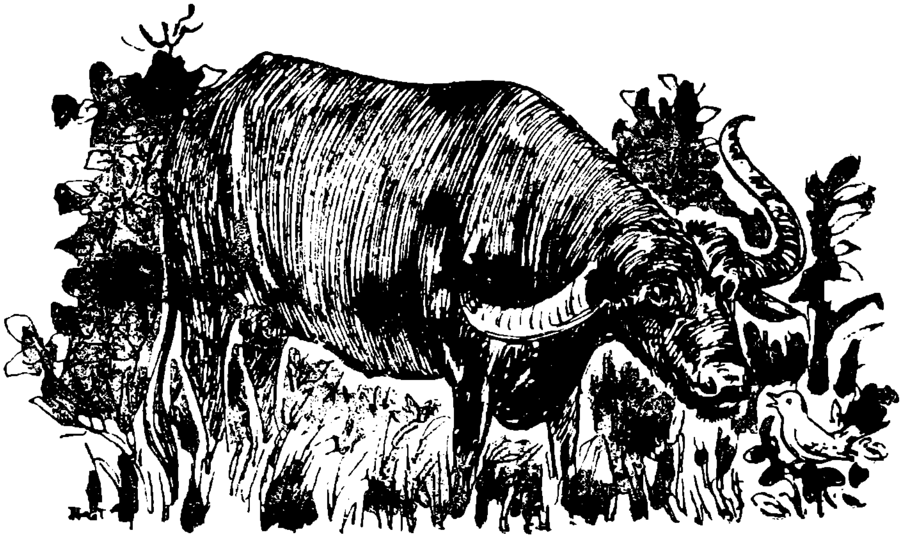

भैंस बोली—यह तो हर कोई देख कर कह सकता है कि
तेरी बीट से मेरा गोबर हमेशा ज्यादा होता है।

मुसाफिर समझ गया कि क्या बात है। वह कुछ सोच कर बोला—मैं तुम्हें निकाल तो दूं, पर मैं तुम्हें खा जाऊंगा। बोलो मंजूर है ?

चिड़िया कुछ सोच कर मान गई। आदमी ने उसे बाहर निकाल लिया और खाने को हुआ।

लेकिन चिड़िया बोली—भैया, इस प्रकार मुझ गन्दी को ही खा जाओगे ? पहले मुझे नहला तो दो।

वह आदमी राजी हो गया। उसने उसे अपने हाथ में पकड़े हुए ही चिड़िया को नहलाया।

नहलाने के बाद वह उसे खाने को हुआ कि चिड़िया फिर बोली—भैया, क्या मुझे इसी तरह खा जाओगे ? कुछ नमक तो लगा लो। बड़ा मजा आएगा।

वह मान गया। उसने नमक लिया। चिड़िया पर लगाया। उसे खाने को हुआ कि चिड़िया फिर बोली—भैया, मुझे सुखा तो लो। क्या इसी तरह मुझे गीली को ही खा जाओगे ? कैसे हो तुम ?

मुसाफिर मान गया। उसने चिड़िया को सूखने के लिए धूप में रखा।

बस, फिर क्या था ? पंख सूखते ही चिड़िया फुर्र से उड़ गई। यात्री देखता ही रह गया।

●

दो तोते

बहुत समय पहले उज्जयिनी में राजा विक्रमादित्य राज्य करते थे। एक दिन विक्रम शिकार से लौट रहे थे कि मार्ग में उन्हें दो सूए (तोते) के बच्चे पड़े मिले। राजा उन दोनों को उठा लाए। शहर आकर एक तोते को उन्होंने एक डोम के यहां रखवा दिया और दूसरे को राजपंडित के यहां।

चार वर्ष के बाद एक दिन राजा को दोनों तोतों की याद आई और वह दोनों को देखने के लिए वेश बदल कर चल दिए।

विक्रम सबसे पहले डोम के यहां गए। जैसे ही विक्रम तोते के निकट पहुंचे, तोता बोला—ऐ, तू कौन है? क्यों आया है? क्या चाहता है? निकल जा यहां से, नहीं तो मार-मार कर मैं तेरा भुरता बना दूंगा।

विक्रम इस तोते की कड़वी बातें सुन कर दुखी हुए और वहां से चल दिए।

राजा समझ गए कि सब संगत का प्रभाव है।

अब विक्रम राजपंडित के घर पहुंचे। जैसे ही वह पिंजरे के निकट आए, तोता बोल उठा—महाराज, पधारिए। स्वागत है आपका! आप बड़ी दूर से आ रहे हैं। कहिए, आपके लिए शर्बत लाऊं या ठंडाई ?

विक्रम इस तोते की मीठी वाणी सुन बड़े प्रसन्न हुए। दोनों तोतों की बातचीत में बड़ा अन्तर था।

राजा समझ गए कि यह सब संगत का प्रभाव है।

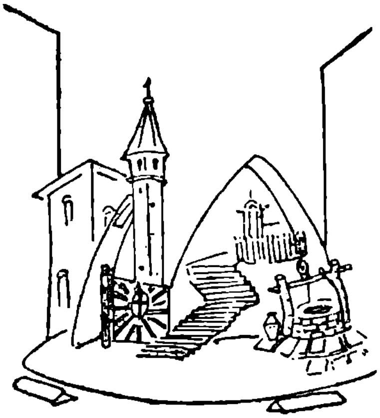

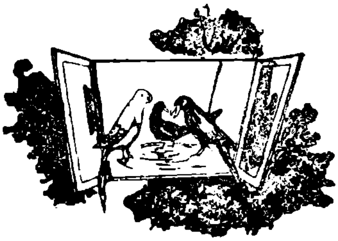

घरमें कौन रहेगा ?

एक थी कोयल । उसका कोई घर न था । सर्दी के दिन थे । वह सर्दी से कांप रही थी । उसके पास ही एक कौआ और एक तोता खड़े थे ।

—मेरे लिए घर कौन ढूंढ़ेगा ? —कोयल ने पूछा ।

—मैं नहीं । —कौआ बोला ।

—मैं नहीं ।—तोता बोला ।

—अच्छा, मैं खुद ही ढूंढ़ लूंगी । —कोयल बोली और घर ढूंढ़ने लगी । चलते-चलते उसे एक लकड़ी का बक्सा मिल गया । वह मिट्टी में दबा हुआ था ।

—इस बक्से को बाहर कौन निकालेगा ? —कोयल ने पूछा ।

—मैं नहीं । —कौआ बोला ।

—मैं नहीं । —तोता बोला ।

—अच्छा, तो मैं खुद ही निकाल लूंगी । —कोयल बोली और चोंच से मिट्टी हटाने लगी । काफी मेहनत के बाद बक्सा निकल आया ।

—इस बक्से को पेड़ पर कौन पहुंचाएगा ? —कोयल ने पूछा ।

—मैं नहीं । —कौआ बोला ।

—मैं नहीं । —तोता बोला ।

अच्छा, तो मैं खुद ही पहुंचा दूंगी । —कोयल बोली और काफी मेहनत के बाद उसने बक्से को पेड़ पर पहुंचा दिया ।

बक्सा बड़ा गर्म था और अन्दर से सूखा था । कोयल को वह बहुत पसन्द आया ।

—इस घर में कौन रहेगा ? —कोयल ने पूछा ।

—मैं । —कौआ बोला ।

—[illegible] । —तोता बोला ।

—नहीं, तुम नहीं रहोगे ।—कोयल बोली—तुमने मेरी मदद नहीं की ।—कह कर कोयल बक्सा में घुस गई ।

—कोयल दीदी, अब मैं तुम्हारी मदद करूंगा ।—कौआ बोला ।

—कोयल दीदी, अब मैं तुम्हारी मदद करूंगा ।—तोता बोला ।

—अच्छा, तो फिर अन्दर आ जाओ ।—कोयल ने कहा और दरवाजा खोल दिया। तीनों साथ-साथ रहने लगे ।

खूब रही

बहुत दिन पहले की बात है कि एक रीछ और एक लोमड़ी जंगल में रहते थे।

रीछ ने तहखाने में शहद से भरी एक बाल्टी छिपा रखी थी।

एक दिन लोमड़ी को इस बात का पता चल गया और वह इस मौके की घात में रहने लगी कि किस तरह शहद पर हाथ साफ किया जाए।

एक दिन वह रीछ की खिड़की के नीचे जाकर दुखी स्वर में कहने लगी—धर्मपिता रीछ, तुम नहीं जानते, मैं कितनी मुसीबत में हूं।

—क्यों, लोमड़ी, क्या बात है ?

—मेरी झोंपड़ी गिर रही है, आज रात भर मुझे अपने घर में रहने दो।

—जरूर, जरूर, भीतर आ जाओ।

रात को जब रीछ सो गया तो लोमड़ी दबे पांव उठी। अचानक रीछ की नींद खुल गई और उसने पूछा—लोमड़ी बेटी, यह किसकी आहट है ?

लोमड़ी ने उत्तर दिया—मेरे पड़ोसियों के घर एक बालक ने जन्म लिया है। वहां से मुझे बुलावा आया था।

—ठीक है, जाओ जाओ।

—लोमड़ी ने तहखाने में घुस कर पेट भर शहद खाया और वापस आकर फिर सो गई।

—लोमड़ी बेटी, तुम्हारे पड़ोसियों ने बच्चे का क्या नाम रखा है ?

—ढक्कनखोल।

—वाह, कितना सुन्दर नाम है !

अगली रात को लोमड़ी फिर आधी रात को उठी तो रीछ ने पूछा—लोमड़ी बेटी, कहां जा रही हो ?

—किसी के घर बच्चा होने वाला है, मुझे जल्दी बुलाया है।

—जाओ, जल्दी जाओ।

लोमड़ी ने फिर तहखाने में घुस कर आधा शहद खत्म कर दिया और फिर लौट कर सो गई।

सुबह उठ कर रीछ ने पूछा—लोमड़ी रानी, बच्चे का क्या नाम रखा है?

—आधाचट!

—कितना प्यारा नाम है।

तीसरे दिन लोमड़ी फिर रात को उठी। रीछ ने पूछा—लोमड़ी बेटी, जल्दी लौट आना, क्योंकि मैं मीठी रोटियां बनाना चाहता हूं।

—फिक्र न करो, रीछ दादा, मैं अभी लौट आऊंगी।

लोमड़ी ने तहखाने में घुस कर इस बार सारा शहद खत्म कर दिया। जब वह वापस लौटी तो रीछ ने पूछा—लोमड़ी बेटी, बच्चे का क्या नाम रखा है?

—सफाचट।

—यह नाम मुझे बहुत पसन्द आया। आओ, अब हम मीठी रोटियां सेकें।

कुछ देर बाद लोमड़ी ने पूछा—रीछ दादा, आपका शहद कहां रखा है?

—तहखाने में। मैं अभी लाता हूं।

रीछ ने तहखाने में जाकर देखा कि बाल्टी में शहद की एक बूंद भी न थी। उसे बड़ा गुस्सा आया।

—मेरा शहद कहां गया? तुम्हारे सिवा यह और किसी का काम नहीं हो सकता।

—मैं क्या जानूं रीछ दादा, मैंने तो तुम्हारे शहद को देखा तक नहीं। तुम बड़े भुलक्कड़ हो। तुमने ही सारा शहद खा लिया होगा।

रीछ कुछ देर सोच कर बोला—अच्छी बात है, अभी पता चल जाएगा कि शहद किसने खाया है। हम दोनों धूप में लेट जाते हैं, सूरज की गर्मी से सारा शहद पिघल कर बाहर आ जाएगा।

दोनों धूप में लेट गए। रीछ को नींद आ गई, लेकिन लोमड़ी जागती रही। उसने देखा कि सूरज की गर्मी से उसके पेट पर शहद की बूंदें छलक आई हैं। उसने इन बूंदों को रीछ के पेट पर लगा दिया और बोली—रीछ दादा! रीछ दादा! उठो, जरा अपने पेट की ओर तो देखो।

बेचारे रीछ को मानना पड़ा कि शहद खुद उसी ने खाया था। लेकिन उसे अभी तक यह याद नहीं आया कि उसने किस दिन शहद खाया था। कैसी विचित्र बात है?

●

आनन्दी कौआ

नानी कहानी कहने लगी—

एक था कौआ। एक बार उस पर राजा को क्रोध आ गया। इसलिए राजा ने अपने नौकरों से कहा—जाओ इस कौए को गांव के बाहर वाले कुएं पर ले जाओ और कीचड़ में कुचल कर मार डालो।

राजाजी के हुक्म के अनुसार कौए को कोचड़ में लथेड़ दिया गया। लेकिन कौए भाई तो कीचड़ में सने-सने आनन्द से बोलने लगे—

कीचड़ में फिसलना सीख रहे हैं, भाई !
कीचड़ में फिसलना सीख रहे हैं।

राजा और उसके नौकर-चाकर तो दंग रह गए कि इस कीचड़ में लथेड़ने पर दुखी होने के बजाय कौआ कैसा आनन्द मना रहा है ? राजा को तो खूब गुस्सा चढ़ा और उसने हुक्म दिया—फेंक दो इसको कुएं में, अभी डूब कर मर जाएगा।

तुरन्त ही कौए को कुएं में डाला गया। लेकिन कौआ भाई तो कुएं में पड़े-पड़े गीत गाने लगे—

कुएं में तैरना सीख रहे हैं, भाई !
कुएं में तैरना सीख रहे हैं।

राजा ने कहा—कौए को इससे भी अधिक सजा देनी होगी।

अब तो कौए को कंटीली झाड़ियों में फेंक दिया गया। लेकिन कौए भाई की खुशहाली में जरा-सा भी फर्क न आया। वह तो उसी मस्ती के स्वर में गाते रहे—

कांटों से कान छिदवा रहे हैं, भाई !
कांटों से कान छिदवा रहे हैं।

राजा ने कहा—भाई, यह कौआ तो बड़ा जबर्दस्त

छप्पर छाना सीखते हैं, भाई !
छप्पर छाना सीखते हैं।

है। चाहे जितने दुख में डालो, यह मस्त रहता है। अच्छा अब देखें सुख देने वाली चीजों में डालने से यह सुखी होता है या नहीं।

फिर क्या हुआ कि कौए भाई को तेल की कोठी में डाला गया।

कौआ भाई तो उसमें कूद-कूद कर नाचने लगे। खूब खुश होकर कहने लगे—

मैं कानों में तेल डालता हूं, भाई!
मैं कानों में तेल डालता हूं।

अब तो राजा ने कौए को घी की हंडिया में डाला। लेकिन उसमें पड़े-पड़े कौआ भाई बोलने लगे—

मैं घी के लपके भरता हूं, भाई!
मैं घी के लपके भरता हूं।

और कौआ राजा को मुंडी मटका कर फुर्र से उड़ गया।

राजा तो खूब खीझा, खूब खीझा और उसने कौआ जी को गुड़ की कोठी में डालने का हुक्म दिया। कौआ भाई फिर मजे से बोल उठे—

गुड़ की डलिया खाते हैं, भाई!
गुड़ की डलिया खाते हैं।

राजा ने अब उसे छप्पर पर फेंकवा दिया। लेकिन कौआ भाई वहां भी टांगें फैला कर कहने लगे—

छप्पर छाना सीखते हैं, भाई!
छप्पर छाना सीखते हैं।

अब तो राजा हार गया। उसने कहा—इस कौए को सजा देना अपने बूते की बात नहीं। इसको तो किसी बात का भी दुख नहीं होता। उड़ा दो इसको फिरने दो मस्त।

राजा हमसे डर गया, भाई!
राजा हमसे डर गया।

और कौआ ऐसा कह कर, राजा को मुंडी मटका कर फुर्र से उड़ गया।

बुराई की सजा

किसी जंगल में एक भयानक अजगर रहता था। वहीं पास में ही मुर्गों का एक गांव बसा था। इन मुर्गों का एक सरदार था कल्लू। वह बूढ़ा था। उसका लड़का भल्लू बड़ा दुष्ट था। वह अपने पिता की कोई बात नहीं मानता था। साथी मुर्गों से वह दिन भर लड़ता था। वह सदा नई-नई शैतानी किया करता था।

रोज-रोज मुर्गों की शिकायतें सुनते-सुनते कल्लू सरदार खीझ उठा। एक दिन उसने अपने लड़के भल्लू को बहुत डांटा-फटकारा। भल्लू को अपने पिता की यह डांट अच्छी नहीं लगी। उसने सब मुर्गों को मार डालने की ठान ली। वह दुष्ट जो था।

सरदार कल्लू को भल्लू के इस इरादे का पता चल गया। भल्लू कभी-कभी अजगर के पास आया जाया करता था। इसलिए भल्लू के पीछे चुपके-चुपके जाकर कल्लू ने यह जान लिया कि अजगर को फुसला कर भल्लू सब मुर्गों को मरवा डालने की कोशिश कर रहा है। कल्लू को यह जान कर बड़ा दुख हुआ कि मेरा बेटा कुलघाती निकला। ऐसे बेटे का न होना ही ठीक है।

कल्लू को एक उपाय सूझा। अजगर के पास जाकर उसने कहा—अजगर भाई, तुम शायद यह न जानते होगे कि मेरा लड़का भल्लू बड़ा दुष्ट है। कल तुम्हें उसकी चालाकी का पता चल जाएगा।

अजगर ने पूछा—वह कैसे ?

कल्लू ने कहा—सब मुर्गों ने एक बड़े गिद्ध से मित्रता कर ली है। भल्लू तुम्हारे पास आया-जाया करता है। इसलिए सब मुर्गों ने भल्लू को तुम्हारे पास भेज कर तुम्हें धोखा देने और मरवा डालने का निश्चय किया है। कल भल्लू आकर तुमसे कहेगा कि मुर्गों की बस्ती में चलो। लेकिन ज्यों ही तुम वहां गए कि वह बड़ा गिद्ध तुम्हें नोच कर खा जाएगा।

अजगर ने कहा—तुमने यह खबर देकर मेरी जो भलाई की है, उसके लिए मैं तुम्हारा एहसानमन्द रहूंगा। मैं अब भल्लू के जाल में फंसनेवाला नहीं।

मुर्गों का सरदार कल्लू प्रसन्न होकर अपनी बस्ती में लौट गया।

दूसरे दिन भल्लू सचमुच अजगर के पास गया और गा-गाकर उससे कहने लगा—

अजगर भैया, चलो, मजे की
दावत आज उड़ाओ।
लाल, सुनहरी कलगीवाले
मुर्गों को तुम खाओ।

अजगर तो यही समझता था कि यह सब उसको फंसाने का जाल है, इसलिए उसने भल्लू को ही पकड़ा और गटक लिया।

दुष्टता का फल बुरा ही होता है।

खरगोश को जुकाम हुआ

एक जंगल में एक बहुत बड़ा और ताकतवर शेर रहता था। जंगल के सभी जानवर उसके भय से थर-थर कांपते थे। एक बार उस शेर ने भालू, बन्दर और खरगोश को अपना मंत्री चुना और उनसे जंगल का राज्य चलाने को कहा।

शेर की देख-रेख में भालू, बन्दर और खरगोश सारे दिन जंगल में घूमते और वहां जानवरों की अड़चनें जान कर उन्हें दूर करने का प्रयत्न करते। वे इस बात का भी ध्यान रखते कि वहां का कोई जानवर शेर की बुराई तो नहीं कर रहा है या उसके राज्य को खत्म करने की तैयारी में तो नहीं लगा हुआ है ?

कुछ दिनों तक तो वे सब साथ-साथ रह कर राज्य का काम चलाते रहे, लेकिन कुछ ही दिनों बाद शेर इन तीनों से तंग आ गया और उनसे पीछा छुड़ाने का उपाय सोचने लगा। उसने सोचा कि अगर वह बिना कसूर के ही उन तीनों को मार खाएगा तो राज्य भर में खलबली मच जाएगी और फिर वहां का कोई भी जानवर उसका विश्वास नहीं करेगा।

यह सोच कर उसने एक तरकीब निकाली और तीनों को बुला कर कहा— मेरे योग्य मंत्रियो, तुम्हें इस पद पर काम करते अब बहुत दिन हो गए हैं। अक्सर ऐसा होता है कि बड़ा पद पाकर लोग बिगड़ जाया करते हैं। मुझे खुशी है कि तुम लोगों में बड़ा पद पाकर भी किसी तरह की बुराई नहीं आई है, लेकिन फिर भी मैं तुम्हारी परीक्षा लेना चाहता हूं। अगर तुम परीक्षा में सफल हो गए तो मैं राज्य का सारा काम तुम लोगों पर छोड़ कर संन्यास ले लूंगा।

तीनों मंत्री परीक्षा देने को तैयार हो गए। शेर सबसे पहले भालू के पास गया और अपना मुंह पूरी तरह खोल कर बोला—बताओ, मेरे मुंह से कैसी गन्ध आ रही है ?

शेर हमेशा कच्चा मांस खाया करता था, इसलिए उसके मुंह से हमेशा बदबू आया करती थी। भालू शेर का विश्वासपात्र था, वह उससे झूठी बात कह कर उसे धोखे

ं नहीं डालना चाहता था। इसलिए उसने कहा—मेरे स्वामी के मुंह से इतनी बदबू ा रही है कि पास खड़ा होना भी कठिन हो रहा है।

यह सुनते ही शेर गरज कर बोला—तुम विद्रोही हो। तुमने अपने राजा का उसके ुंह पर ही अपमान किया है। तुम्हारे इस विद्रोह की सजा मौत है।—यह कह कर शेर ालू के ऊपर टूट पड़ा और उसने पलक झपकते ही उसे मार डाला।

इसके बाद शेर बन्दर के पास गया और अपना मुंह पूरी तरह खोल कर बोला—ताओ, मेरे मुंह से कैसी गन्ध आ रही है?

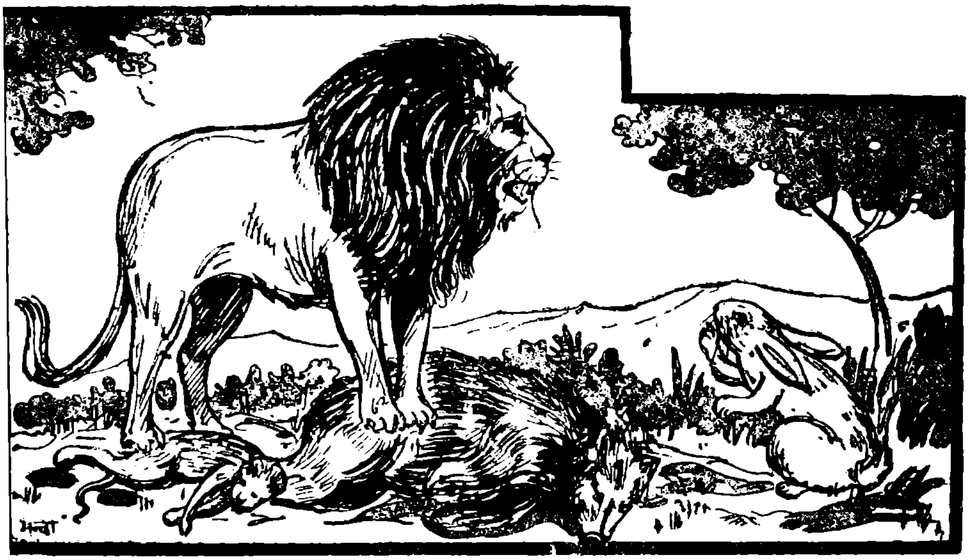

उसने एक तरकीब सोची और [illegible] मेरे स्वामी, मुझे
खेद है कि आज मुझे बड़े जोर का जुकाम हो गया है।

बन्दर भालू को मरते देख चुका था। उसने सोचा कि अगर उसने भी सच्ची ात कही तो वह भी मारा जाएगा। इसलिए उसने शेर की खुशामद करना ही ठीक मझा। उसने उत्तर दिया—मेरे स्वामी, आपके मुंह से तो बड़ी मीठी खुशबू आ रही है। सी मीठी खुशबू तो दुनिया की किसी भी वस्तु में नहीं होगी।

लेकिन इस बार भी शेर क्रोध से गरज कर बोला—तुम झूठे खुशामदी हो। सभी ानते हैं कि मांस खाने के कारण मेरे मुंह से बदबू आती है। ऐसे झूठे और खुशामदी त्रियों से तो मेरा राज्य ही खतरे में पड़ सकता है।—इतना कह कर शेर बन्दर पर पटा और उसे भी मार डाला।

अब खरगोश की बारी थी। शेर उसके पास गया और अपना मुंह पूरी तरह खोल कर बोला—बताओ मेरे मुंह से कैसी गन्ध आ रही है ?

खरगोश अपनी आंखों के सामने भालू और बन्दर को मरते देख चुका था। इसलिए उसने एक तरकीब सोची और कहा—मेरे स्वामी, मुझे खेद है कि आज मुझे बड़े जोर का जुकाम हो गया है और मेरी नाक बिल्कुल बन्द हो गई है, इसलिए मैं किसी भी तरह की खुशबू और बदबू का अनुभव नहीं कर सकता। इस समय आप मुझे घर जाने की आज्ञा दे दीजिए। जब मेरा जुकाम ठीक हो जाएगा, तभी मैं आपके मुंह की गंध के बारे में कुछ बता सकूंगा।

अब शेर के पास खरगोश को मारने का कोई बहाना नहीं रह गया था। उसने लाचार होकर उसे घर जाने की इजाजत दे दी। इसके बाद खरगोश फिर कभी शेर के सामने नहीं आया।

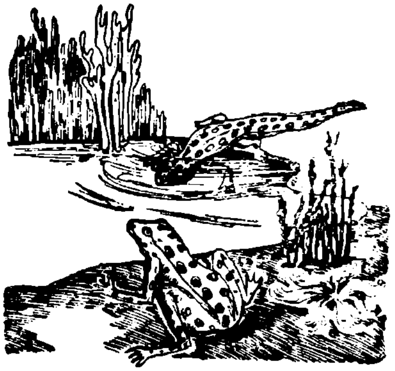

किसान और फाख्ता

एक किसान बड़ा लालची था। वह दिन-रात अपने खेत की रखवाली करता। किसी पक्षी को अपने गेहूं के खेत में फटकने न देता और किसी प्राणी को अनाज की एक बाल तक न देता।

लेकिन एक फाख्ता रोज सुबह-सुबह आती और कुछ बालें अपनी चोंच में भर कर ले जाती। किसान ने भी देख लिया कि यहां से बालें चोरी होती हैं। वह कब यह सहन कर सकता था कि कड़ी मेहनत से पैदा किया हुआ अनाज यों चोरी चला जाए? चोर का पता चलाने के लिए किसान घात में बैठ गया। सुबह जब फाख्ता आई तो किसान ने उसे झट पकड़ लिया और कहा—तू बड़ी शैतान है। मेरा आधा खेत खत्म कर दिया। अब तुझे नहीं छोड़ूंगा।

फाख्ता ने विनती की—किसान भाई, मुझे छोड़ दो। मेरे बच्चे भूखे हैं। मैं चोरी नहीं करती। उनके लिए दाना-दुनका ले जाती हूं।

किसान बोला—नहीं, तू बड़ी दुष्ट है। मैं तुझे राजदरबार से दण्ड दिलवाऊंगा। तूने मेरा आधा खेत उजाड़ दिया।

फाख्ता फिर गिड़गिड़ाई—किसान भैया, तुम्हारे भी बाल-बच्चे होंगे, उनका ध्यान करो और मुझे छोड़ दो। विनती करके वह गाने लगी—

नन्हे-मुन्ने बच्चे मेरे,
आंधी में उड़ जाएंगे।
मेंह पड़ा तो भीगेंगे,
धूप लगी कुम्हलाएंगे।

किसान का कठोर दिल फिर भी नहीं पसीजा। उसने फाख्ता को नहीं छोड़ा और राजदरबार की ओर लेकर चल पड़ा। रास्ते में उन्हें एक बूढ़ा मिला, जो दस-

बारह ऊंटों को एक-दूसरे की पूंछ से बांधे और सबसे अगले की डोर हाथ में पकड़े सामने से निकला। फाख्ता ने उस बूढ़े को देखकर फरियाद की—

नन्हे-मुन्ने बच्चे मेरे,
आंधी में उड़ जाएंगे।
मेंह पड़ा तो भीगेंगे,
धूप लगी कुम्हलाएंगे।

फाख्ता का गीत सुन कर बूढ़े का दिल पिघल गया। उसने किसान से कहा कि तुम इस बेचारी फाख्ता को छोड़ दो। जब किसान नहीं माना, तो उसने फिर कहा—यह चोर नहीं एक गरीब मां है। अपने बच्चों के लिए चार बालें ले गई तो क्या हुआ? तुम इसे छोड़ दो।

—आप चार बालों की बात कहते हैं?—किसान बोला—इसने मेरा आधा खेत उजाड़ दिया। मैं तो इसे राजदरबार में पेश करके ही दम लूंगा।

बूढ़ा बोला—देखो भई, तुम मेरी मानो। तुम्हारा जो नुकसान हुआ है, उसके बदले मेरा एक ऊंट ले लो और इसे छोड़ दो।

लेकिन अब किसान के मन में यह लोभ जागा कि जब फाख्ता का गीत सुनकर यह बूढ़ा एक ऊंट दे रहा है तो राजा यह गीत सुनकर इसे छुड़ाने के लिए जाने क्या कुछ दे डाले। अतः उसने बूढ़े की बात नहीं मानी।

किसान राजदरबार में आया और राजा के पास जाकर फरियाद की—महाराज, इस फाख्ता ने मेरा आधा खेत उजाड़ दिया। यह बड़ी खराब और चालाक है। इसे दण्ड दीजिए।

फाख्ता ने अपनी सफाई में कहा—महाराज, मैं चोर नहीं हूं। अपने बच्चों के लिए इसके खेत से दो चार बालें अवश्य ले लिया करती थी। आप मुझे इस किसान के चंगुल से छुड़ाइए।—और वह गाने लगी—

नन्हे-मुन्ने बच्चे मेरे,
आंधी में उड़ जाएंगे।
मेंह पड़ा तो भीगेंगे,
धूप लगी कुम्हलाएंगे।

फाख्ता का गीत सुन कर राजा और दरबारियों के दिल पिघल गए। उन्हें पक्षी के नन्हे-मुन्ने बच्चों पर बड़ी दया आई।

राजा ने किसान से कहा— भले आदमी, तुम इस पक्षी को छोड़ दो। हम तुम्हारा आधा लगान मुआफ करते हैं।

चालाक किसान ने कहा—महाराज, इसने मेरा जो नुकसान किया है, वह बहुत अधिक है। मैं आपकी प्रजा हूं। आपके पास फरियाद लेकर आया हूं। आप चोर को दंड देकर मेरे साथ न्याय करें।

राजा ने देख लिया कि किसान यों नहीं मानेगा। कुछ सोच कर उन्होंने कहा—अच्छा, हम तुम्हारे साथ चलकर देखते हैं। अगर तुम्हारा नुकसान वाकई अधिक हुआ होगा, तो उसे पूरा करेंगे और अगर यह देखा कि तुम झूठ बोल रहे हो, तो तुम्हें दण्ड देंगे।

यह सुन कर किसान की सिट्टी-पिट्टी गुम हो गई। वह बात बदल कर बोला—महाराज, आप खेत पर जाने का कष्ट न कीजिए। आप कहते हैं तो मैं फाख्ता को छोड़ देता हूं।

नहीं, तुम न्याय चाहते हो।—राजा ने उत्तर दिया—हम तुम्हारे खेत पर चल कर ही न्याय करेंगे।

राजा अपने कुछ दरबारियों के साथ खेत पर आया। किसान की गेहूं की पकी फसल सोने के सदृशय दिखाई दे रही थी और हवा में लहरा रही थी। उसका कुछ भी नहीं बिगड़ा था। कहीं से एक बाल भी नहीं टूटी थी।

कहते हैं कि ऊंटों वाला बूढ़ा फसलें पकाने वाला देवता था। उसी की करामात से यह सब कुछ हुआ था।

राजा ने फाख्ता को मुक्त कर दिया और किसान को भारी दण्ड दिया।

छोटा खंजन और सदाबहार पेड़

जाड़ा आ गया था। कड़ी सरदी पड़ रही थी। नालों और झीलों का पानी जम रहा था। सभी पक्षी गरम देशों को चले गए थे, परन्तु एक छोटा-सा खंजन अभी यहीं था। किसी दुष्ट की गुलेल ने उसके पंख तोड़ डाला था। इसलिए वह अपने साथियों के साथ उड़कर नहीं जा सका था।

उसने वन के किसी पेड़ के पत्तों में छिपकर अपने प्राण बचाने की सोची। इसलिए वह पहले शहतूत के पेड़ के पास गया और कहने लगा--हे दयालु शहतूत, मेरा पंख टूट गया है और मेरे सब साथी चले गए हैं। यदि अनुमति हो तो मैं उनके लौटने तक आपके पत्तों में निवास करूं।

परन्तु शहतूत ने गर्दन उठा कर कहा—नहीं, हमें अपने परिचित व्यक्तियों को ठंड से बचाना है। मैं तुम्हारी कोई सहायता नहीं कर सकता।

तब बेचारा खंजन पीपल के पास गया और प्रार्थना करने लगा—हे महापीपल, आप बड़े मजबूत हैं। क्या आप मुझे वसन्त ऋतु तक अपनी शाखाओं में ठहरने की अनुमति देंगे ?

पीपल बोला—नहीं, वसन्त अभी बहुत दूर है। तुम शायद मेरे छोटे-छोटे फल ही खा डालो।

परन्तु शहतूत ने गर्दन उठा कर कहा—मैं तुम्हारी कोई सहायता नहीं कर सकता।

तब खंजन ने सोचा कि शायद बरगद को मुझ पर दया आ जाए। वह उसके निकट जाकर नम्रता से कहने लगा—हे दयामय बरगद, मेरे पंख टूट गए हैं। क्या आप कृपा करके मुझे अपनी टहनियों में जाड़ा काटने की अनुमति देंगे।

परन्तु बरगद को भी उस पर दया नहीं आई। वह अभिमान से बोला—यहां से चले जाओ, हम बरगद लोग अपरिचित पक्षियों को शरण नहीं दिया करते।

अब खंजन को बहुत दुख हुआ। उसे कुछ नहीं सूझता था कि क्या करे और कैसे करे ? वह उड़ने की कोशिश कर रहा था कि इतने में उसे ये शब्द सुनाई पड़े—प्यारे खंजन, तुम कहां जा रहे हो ?

खंजन बोला—कह नहीं सकता कि कहां जाऊंगा। मैं सर्दी से मरा जा रहा हूं।

तब दयालु आम ने कहा—यहां आओ और जाड़े भर मेरे गरम पत्तों में बसेरा करो।

निकट ही नारंगी खड़ी थी। वह बोली—मैं तुम्हारी सहायता करूंगी। मैं ठंडे पवन के झोंकों से तुम्हें बचाऊंगी।

चिरौंजी का पेड़ उनकी बातें सुन रहा था। वह कहने लगा—भूख लगने पर मैं तुम्हें अपने दाने खाने को दूंगा।

छोटा खंजन बड़ा प्रसन्न हुआ। उसने उन सबको धन्यवाद दिया। रात को उत्तर की ठंडी हवा चलने लगी। उसके लगने से वन के दूसरे सभी पेड़ों के पत्ते झड़ गए। वे नंगे-धड़ंगे खड़े रह गए। तब हवा ने जाड़ा-राजा से पूछा—क्या मैं सभी पेड़ों के पत्ते गिरा दूं।

परन्तु राजा ने उत्तर दिया—नहीं, जिन परोपकारी पेड़ों ने छोटे खंजन पर दया दिखाई है, उनके पत्ते मत गिराना।

यही कारण है कि शहतूत, पीपल, बरगद और शीशम आदि के पत्ते तो जाड़े की हवा में झड़ जाते हैं, परन्तु आम, नारंगी और चिरौंजी के पेड़ सदा हरे-भरे रहते हैं।

●

दो दोस्त

एक था हिरन और एक था कौआ। दोनों में बहुत दोस्ती थी। कौआ सुबह उठ कर ऊंचा उड़ता और हरी-हरी घास का पता लगा लाता। फिर वह अपने दोस्त हिरन को उस जगह का पता बता देता। हिरन पेट भर घास खाता और नदी में पानी पीता। कौआ भी अपना पेट भर लेता। इस तरह दोनों खा-पीकर शाम को अपने ठिकाने लौट आते। सुख से खा-पीकर हिरन खूब मोटा हो गया था।

एक दिन एक दुष्ट गीदड़ की नजर हिरन पर पड़ी। उसने सोचा कि इसे किसी तरह फंसाना चाहिए ताकि उसका मांस उसे खाने को मिल जाए। उसने हिरन से दोस्ती का ढोंग रचा। कौआ समझदार था। उसने कहा—हिरन भाई, इस गीदड़ की नीयत अच्छी नहीं है। तुम इसकी बातों में मत आना।

पर नई-नई दोस्ती के चाव में हिरन ने कौए की चेतावनी पर ध्यान नहीं दिया। धीरे-धीरे वह सारा दिन गीदड़ के साथ ही रहने लगा। एक दिन गीदड़ ने उसे किसान के खेत में जाने की सलाह दी। कुछ दिन बाद किसान ने अपने खेत में जाल बिछा दिया। हिरन उसमें फंस गया। इतने में गीदड़ आया। हिरन को जाल में फंसे देख वह मन-ही-मन बहुत खुश हुआ। हिरन बोला—भाई गीदड़, आप इस जाल को अपने दांतों से काट कर मुझे छुड़ा दीजिए।

गीदड़ बोला—भाई, क्या करूं? आज तो इतवार है। मेरा तो उपवास है, सो मैं मांस को नहीं छू सकता।

अब हिरन को अपनी भूल का पता चला।

उस रात को जब हिरन नहीं लौटा तो कौआ उसकी खोज में निकला। उसे जाल में फंसा देख कौए को बड़ा दुख हुआ। हिरन रोने लगा तो कौआ बोला—घबराओ मत, दोस्त! अभी किसान आने ही वाला है। तुम मरे हुए हिरन की

तरह अकड़ कर पड़ जाओ। जब किसान जाल लपेटना शुरू करेगा, मैं कांव-कांव करके तुम्हें इशारा कर दूंगा। तुम उठ कर भाग जाना।

हिरन ने ऐसा ही किया। उसे भागते देख किसान ने एक डंडा खींच कर मारा। हिरन को तो डंडा लगा नहीं, गीदड़ झाड़ी में छिपा बैठा था, डंडा उसके लगा और वह मर गया।

बुराई का नतीजा हमेशा बुरा होता है।

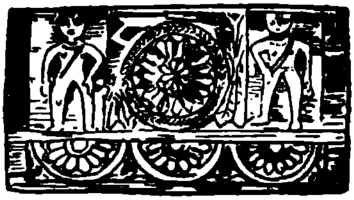

सयाना कौआ

एक जंगल था। उसमें एक कौआ रहता था। एक दिन वह कौआ शहर गया। शहर में उसे एक रोटी का टुकड़ा मिला। रोटी का टुकड़ा पाकर कौआ बड़ा खुश हुआ। पर रोटी का टुकड़ा सूखा हुआ था।

रोटी के टुकड़े को लेकर कौआ उड़ चला। उड़ते–उड़ते वह सोचने लगा— यह रोटी सूखी है। इसे मैं कैसे खाऊं ?

तभी उसे एक घड़ा दिखाई दिया। घड़ा देख कर कौआ नीचे उतर पड़ा।

घड़ा पानी से भरा हुआ था। कौए ने रोटी का टुकड़ा उसमें डाल दिया। इससे रोटी गीली हो गई। अब कौआ उसे खा सकता था।

तब रोटी का टुकड़ा चोंच में दबा कर कौआ पेड़ पर जा बैठा। वहां बैठ कर वह उसे मजे से खाने लगा।

●

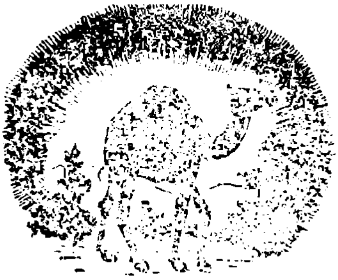

विचित्र ऊंट

एक नदी के किनारे सुन्दरवन नाम का एक खूब घना जंगल था। वहां छायादार ऊंचे-ऊंचे पेड़ और फूलों से लदी लताएं थीं। बीच में एक पहाड़ी पड़ती थी। उसके पार मधुवन नाम का एक दूसरा जंगल था। दोनों जंगलों में अनेक प्रकार के पशु रहते थे। सुन्दरवन का राजा एक बुद्धिमान हाथी था जबकि मधुवन का पक्की तौर से कोई राजा था ही नहीं। वहां तो जिसकी लाठी उसकी भैंस की नीति चलती थी। इसलिए वहां बहुत अराजकता फैली हुई थी।

एक बार मधुवन की एक गैया सुन्दरवन के हाथी के पास आकर बोली—महाराज, हमारी एक विनती है। यदि आप किसी तरह मधुवन के पशुओं को अपनी चतुराई से राजी कर सकें तो उस वन की प्रजा भी आपकी छाया में सुख-चैन से रह सके। वहां तो हरदम हाय-तोबा ही मची रहती है।

हाथी दादा कुछ सोच में पड़ गए। फिर बोले—ठीक है। कुछ उपाय जरूर किया जाएगा।

इसके बाद उन्होंने एक ढिंढोरा पिटवाया कि मधुवन और सुन्दरवन में एक प्रतियोगिता होने वाली है। जिसके यहां कोई सबसे विचित्र जानवर होगा, दूसरा राज्य उसकी अधीनता स्वीकार कर लेगा।

उन दिनों मधुवन में एक भेड़िए ने बहुत गड़बड़ मचा रखी थी। उसने सोचा यह कौन मुश्किल बात है। मैं अभी सब जानवरों को इकट्ठा होने का हुक्म देता हूं और जिनकी शक्ल-सूरत अजीब होगी—उनमें से एक छांट कर उसे मुकाबले में पेश किया जाएगा।

इधर सुन्दरवन में हाथी ने अनेक जानवरों को जोड़ कर एक ऐसा ऊंट बनाया, जो अनेक बोलियां बोल सकता था और बहुत-सी शक्लों की एक नुमाइश-सा दिखता

था। इस विचित्र ऊंट को देख कर मधुवन के सभी पशु-पक्षी हैरान रह गए और सबने हाथी दादा की चतुराई के आगे हार मान ली और उसे अपना राजा स्वीकार कर लिया। भेड़िया मुंह ताकता रह गया।

बच्चो, तुम पहचानो तो सही कि इस नुमाइशी ऊंट में कौन-कौन से जानवरों का मेल है।

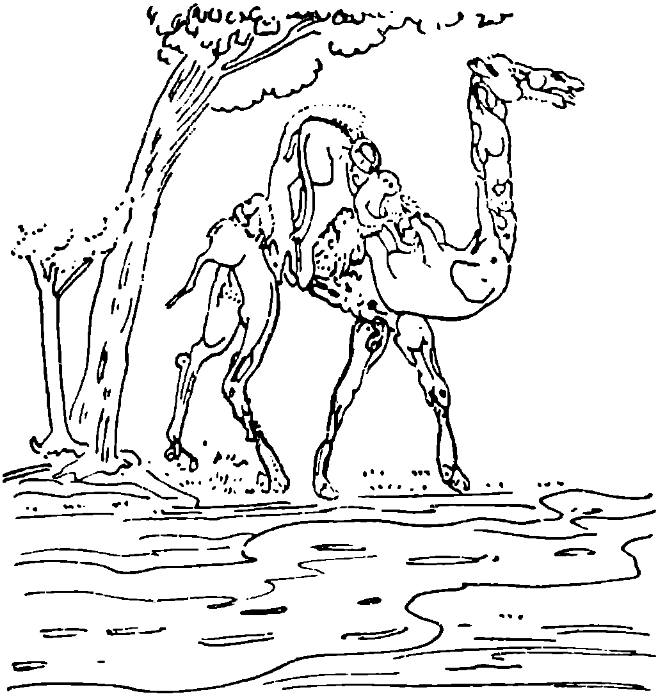

इस चित्र में निम्नलिखित पशु-पक्षी हैं—खरगोश, मुर्गी, बिल्ली, टिड्डा, चूहा, हाथी, शेर, मक्खी, साही, कछुआ, लोमड़ी, गिलहरी, बारहसिंगा, छिपकली, हंस, फनियल सांप, नेवला, भूरा खरगोश, मछली, मेंढक, दो चूहे, दो घोंघे और दो तितलियां। इस प्रकार कुल मिला कर 28 जीव-जन्तुओं के सहयोग से यह विचित्र ऊंट तैयार हुआ है।

तुम इन सब जीव-जन्तुओं को इस ऊंट के ढांचे में ढूंढो।

●

नीला गीदड़

किसी जंगल में एक गीदड़ रहता था। एक दिन भूख से बेचैन होकर वह लालची एक नगर में आया। उसे देख कर चारों ओर से कुत्ते भौंकते हुए दौड़े और उसे काटने लगे। उनसे जान बचाने के लिए गीदड़ पास ही एक रंगरेज के घर में घुस गया। वहां नील के रंग से भरा एक बहुत बड़ा बरतन रखा था। गीदड़ बरतन में गिर पड़ा। बाहर निकला तो उसका रंग नीला हो गया था।

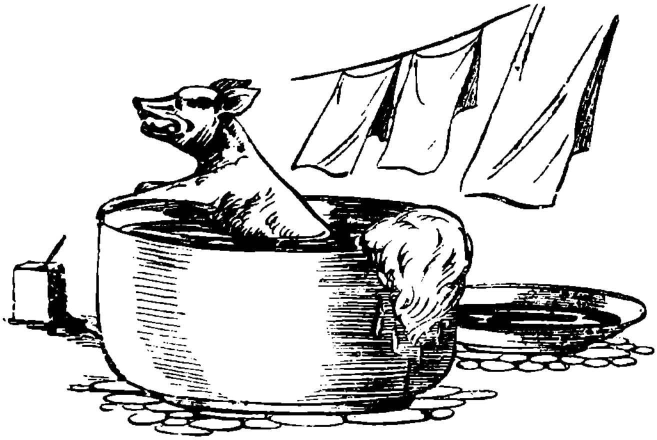

बाहर निकला तो उसका रंग नीला हो गया था।

दूसरे कुत्ते जो वहां थे उन्होंने उसे गीदड़ नहीं समझा और वे अपनी-अपनी राह चले गए। गीदड़ फिर घूमता हुआ जंगल की तरफ चला गया। नील अपना रंग कभी नहीं छोड़ता। गीदड़ का रंग भी खूब नीला हो गया और उसकी चमक तमाल के पेड़ की तरह हो गई। उसे देख कर शेर, बाघ, भेड़िए आदि जानवर डर गए। वे घबड़ा कर इधर-उधर भागने लगे और कहने लगे कि इस अजीब जानवर की आदत और बल का कुछ पता नहीं, इसलिए हमें इससे दूर भागना चाहिए।

नीले गीदड़ ने इन जानवरों को घबराया हुआ देखा तो कहा—अरे जानवरो! तुम मुझे देखते ही भाग क्यों रहे हो? डरो मत। ब्रह्मा ने मुझे अपने हाथों से बनाया और कहा, 'जानवरों का कोई राजा नहीं है। इसलिए मैं उनके राजा के रूप में तेरा

राजतिलक करता हूं। तू जाकर सबको पाल-पोस।' इसलिए मैं यहां आया हूं। सबको मेरी छत्र-छाया में रहना चाहिए। मेरा नाम कुकुद्रुम है। मैं तीनों लोकों के जानवरों का राजा हूं।

यह सुन कर शेर, बाघ आदि सब उसे चारों ओर से घेर कर बैठ गए और कहने लगे—स्वामी! प्रभो! आज्ञा दीजिए।

उसने शेर को मंत्री, बाघ को सेजपाल, चीते को राजा की पान-सुपारी का मालिक और भेड़िये को दरबान बनाया। पर उसके जितने सगे-सम्बन्धी गीदड़ थे, उनके साथ उसने बात तक नहीं की। सबको उसने धक्के देकर बाहर निकलवा दिया। कुछ दिन बाद एक बार उसने दूर से चिल्लाते हुए गीदड़ों की आवाज सुनी तो उसके शरीर के रोएं खड़े हो गए। आंखों से खुशी के आंसू बह निकले और वह भी उनके सुर में सुर मिलाकर हुआ-हुआ करने लगा।

शेर वगैरह ने उसको 'हुआ! हुआ!' चिल्लाते सुना तो वे पहचान गए कि यह गीदड़ है। थोड़ी देर के लिए शर्म से उन्होंने सिर झुका लिया। फिर कहा— अरे! इसने हम सबको ठगा है। यह तो एक मामूली गीदड़ है। मारो इसे।

यह सुनकर नीला गीदड़ भागना ही चाहता था कि शेर आदि ने उसके टुकड़े-टुकड़े कर दिए।

राजा अजित नारायण

कुरु प्रदेश में एक राजा राज्य करता था। राजा का नाम था अजित नारायण। राजा बड़ा वीर और प्रजा-सेवक था। उसके मन्त्री और सेनापति भी योग्य और वीर थे। उसका कोषाध्यक्ष ईमानदार और प्रजा का सेवक था। उसकी प्रजा उसके राज्य में सुखी थी। खूब खेती होती और खूब व्यापार चलता। वह सब प्रकार से प्रसन्न था।

किसी के दिन सदैव एक से नहीं रहते। उसके राज्य में बहुत भयंकर सूखा पड़ा और महामारी फैल गई। राजा बहुत चिन्तित हुआ। जितना भी अनाज सुरक्षित रखा था, अजित नारायण ने प्रजा को बांट दिया, किन्तु ईश्वर की इच्छा के सम्मुख उसकी एक न चली। उसकी प्रजा दुखी होने लगी। मन्त्री की मृत्यु हो गई और सेनापति बीमार हो गया। संकट की उस घड़ी में उसका कोषाध्यक्ष भी नौकरी छोड़कर चला गया। राजा ने अपनी रानी के साथ मिलकर तप किया। राजा खेतों में हल चलाता और रानी प्रजा की सेवा करती।

राजा और रानी के कठोर तप से विपदा के दिन टल गए। खेतों में खूब अनाज पैदा हुआ और महामारी भी दूर हो गई। प्रजा ने राजा का जय-जयकार किया और देवताओं की स्तुति की।

राज्य का सुख लौटा ही था कि राजा के शत्रुओं ने मिलकर उस पर चढ़ाई करने का समाचार भेजा। अकेला कोई भी राजा उससे युद्ध करने की शक्ति नहीं रखता था किन्तु यह देखकर कि अजित नारायण के पुत्र विलासी हैं और इस समय वह अकेला है उन्होंने मिलकर आक्रमण की घोषणा कर दी। अजित नारायण इस स्थिति में परेशान हो गया और मन ही मन चिन्ता में घुलने लगा।

बहुत विचार करने के बाद राजा को एक युक्ति सूझी। उसने सोचा कि अन्तिम प्रयास करके देखना चाहिए। उसने अपने चारों पुत्रों को बुलाया। पुत्र आ तो गए, किन्तु उनमें से बड़े ने अपने पिता से कहा, "हम अपने भोग-विलास में आनन्द मना रहे थे, आपने हमें क्यों बुलाया है?" राजा ने स्थिति को देखा और सोचकर अपने पुत्रों से कहा, "मेरे प्यारे पुत्रो, तुम देख रहे हो कि हम कितनी बड़ी विपदा को सहकर कमजोर पड़ गए हैं। तुम हो कि कोई चिन्ता ही नहीं। इस पर शत्रुओं ने हमारे ऊपर

राजा ने अपने चारों बेटों को बुलाया।

आक्रमण कर दिया है। हम पंगु हुए अलग-अलग, अपने-अपने संसार में मस्त हैं। यदि यह राज्य ही नहीं रहेगा, स्वतंत्रता ही नहीं रहेगी, तो यह सम्मान और सुख-वैभव भी नहीं रह सकता।"

पिता के इन वचनों को सुन कर चारों राजकुमार परेशान हो गए और एक दूसरे का मुंह देखने लगे। उनमें से एक ने हिम्मत करके उत्तर दिया। "पिता जी, राज्य आपका है और हमारे सुख-वैभव की जिम्मेदारी आप पर है। हम किसी झगड़े में नहीं पड़ना चाहते और सुख पूर्वक जीना चाहते हैं।" यह सुनकर अजित नारायण को धक्का लगा वे गहरे सोच में डूब गए। अन्त में विचार करके उन्होंने अपने पुत्रों से कहा, "मेरे प्यारे बेटो जरा गहराई से विचार करो। हम सब अलग-अलग अपने जीवन का सुख देख रहे हैं। हम यह नहीं सोच रहे कि यह सारा सुख इस राज्य के सहारे है। यदि यह राज्य ही नहीं रहा तो हमारा सुख-वैभव कैसे रह सकता है।

यह सुनकर चारों पुत्र अवाक् रह गए। दूसरे पुत्र ने हिम्मत करके अपने पिता से कहा, "यह जिम्मेदारी आपकी है? हम इसमें क्या कर सकते हैं?" यह सुनकर राजा को दुख हुआ, किन्तु परिस्थिति को पहचानकर वे बड़े प्यार से बोले, "तुम ठीक कहते हो बेटा। किन्तु मेरी एक बात ध्यान से सुनो। मेरा मन्त्री मर गया है, सेनापति बीमार है तथा कोषाध्यक्ष राज्य छोड़कर चला गया है। तुम सब अपने-अपने सुख में लीन हो। मैं अकेला रह गया हूं। ऐसी स्थिति में मैं प्रजा का पालन और शत्रुओं का विनाश एक साथ कैसे कर सकता हूं। शक्ति किसी एक में नहीं, संगठन में है। शक्ति में ही जीवन है और जीवन में ही सुख भोग है। इस समय यदि हम संगठित होकर कार्य करें तो विजय हमारी हो सकती है।" पिता के इन वचनों को सुनकर तीसरा पुत्र बोला, "तो हमें बताइए कि इस स्थिति में हम कैसे और क्या कर सकते हैं।"

राजा अजित नारायण को शान्ति मिली और उसने कहा, "हम संगठित होकर राज्य पालन और शत्रुओं का सामना कर सकते हैं। तुम हृष्ट-पुष्ट हो और बुद्धिमान हो। केवल संगठन की कमी है। इस समय यदि तुममें से एक मत्री का कार्यभार संभाले, दूसरा सेनापति का पद ग्रहण करे तथा तीसरा कोषाध्यक्ष बनकर आन्तरिक व्यवस्था बनाए रखे तो हम शत्रुओं पर विजय प्राप्त कर सकते हैं। यदि तुम एक होकर मेरे हाथ मजबूत करो तो मैं देखता हूं कि कैसे ये शत्रु हमें पराजित कर सकते हैं? और कैसे ये हमारा सम्मान, सुख और वैभव छीन सकते हैं।" पिता के इन वचनों का पुत्रों पर बहुत प्रभाव पड़ा। उनकी आंखें चमकने लगीं। चारों ने झुककर पिता के चरण छुए और संगठित होकर कार्य करने की शपथ ली।

उन्होंने मिलकर राज्य का कार्य भार संभाला तथा शत्रुओं को पराजित किया। अजित नारायण, उसकी रानी, पुत्र और प्रजा सभी को सन्तोष हुआ और राजा सब के साथ अपने राज्य में सुखपूर्वक फिर से राज्य करने लगा।

सूत की अंटी

पिंकी और अनिल ने जिद करके तोता-मैना पाल रखे थे। पिंकी और अनिल में झगड़ा होता, तो तोता और मैना भी वैसी ही नकल करते। एक दिन उन्होंने देखा, सूत की अंटी पर दोनों बच्चे झगड़ रहे हैं। झगड़ा बढ़ता गया।

—जा जा, तू नहीं तोड़ सकता।

—हट जा, मैं तोड़ कर ही छोड़ूंगी।

—अनिल और पिंकी आपस में तू-तू-मैं-मैं कर रहे थे।

—क्यों बेटे, इस सूत की अंटी पर क्यों पिले हुए हो। इस बेचारी से क्या खता हुई है। —मां बोली।

पिंकी आंखें मलती हुई मां के सामने खड़ी हुई—मां, मां, यह अनिल जो है न बड़ा शैतान है। कहता है इस सूत की अंटी को मैं अकेला तोड़ दूंगा। मैंने कहा—हम दोनों मिलकर तोड़ेंगे। यह पागल है न मां।

अनिल बोला—मां, भला यह छोटी सी मिर्ची इसे तोड़ सकती है ?

मिर्ची होगा तू-तू-तू। मां, इसे चुप करो न। —पिंकी गुस्से में तनकर बोली।

मैना बोली—अनिल गन्दा है।

तोता बोला—पिंकी गन्दी है।

मां ने डांटा—तोता मैना चुप। अनिल पिंकी चुप।

—देखो, आपस में झगड़ने से यह सूत की अंटी कभी नहीं टूट सकती।

—अच्छा जरा बताओ अनिल, इस अंटी में कितने धागे होंगे ?

अनिल बोला—होंगे कोई 500 से ऊपर।

मां ने कहा—तो बुद्धू कहीं के, इन्हें तुम दो मिलकर कैसे तोड़ सकते हो ?

—इन्हें तो मैं भी नहीं तोड़ सकती।

—और पिताजी ?—पिंकी बोली।

—वे भी नहीं तोड़ सकते ?—मां ने कहा।

सूत की अंटी को लेकर दोनों बहन-भाई झगड़ा करने लगे।

—तो फिर कैसे टूट सकते हैं ये मां ? —अनिल ने अचम्भे से पूछा ।

मां ने दोनों को पुचकारते हुए कहा—देखो, बच्चो, यह सूत की अंटी है न इसमें 500 धागों से ऊपर हैं जो एक साथ नहीं टूट सकते, क्योंकि इनमें संगठन का बल है ? लेकिन अगर इन्हें एक-एक करके तोड़ा जाए तो सब टूट जाएंगे ।

दोनों बच्चे चुपचाप मां की बात सुन रहे थे और तोता मैना भी ।

—अरे, ले न तोड़ इन्हें एक एक करके । पिंकी तू भी भैया के साथ लग जा । —मां ने हिम्मत बढ़ाते हुए कहा । —बात की बात में धागे टूट गए । बच्चो, देख लिया अंटी के कच्चे धागों का बल । सचमुच संगठन में बहुत बड़ी ताकत है ।

तोता कहने लगा—संगठन में ताकत है ।

मैना बोली—गलत । संगठन में बहुत बड़ी ताकत है । ठीक बोलो ।

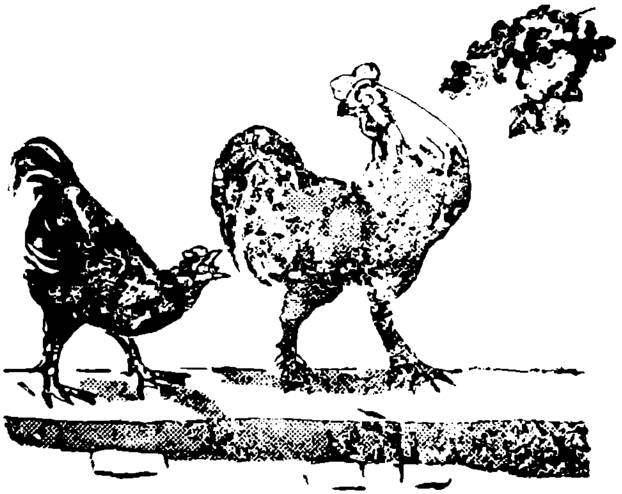

प्रकाशन विभाग
सूचना और प्रसारण मंत्रालय
भारत सरकार